विस्तार परिदृश्य

हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सारांश' प्रशिक्षण कार्यशाला
23 नवम्बर 2010
भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद
देहरादून

विस्तार परिदृश्य

प्रस्तावना

विस्तार निदेशालय का उद्देश्य देशव्यापी नेटवर्क, विभिन्न प्रकाशनों, कार्यशालाओं तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न दायित्वधारियों को उपयोगी अनुसंधान परिणाम मुहैया कराना है। निदेशालय द्वारा भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों और केंद्रों की विभिन्न विस्तार गतिविधियों से समन्वय किया जाता है और विस्तार की व्यापक रणनीतियां विकसित की जाती हैं।

निदेशालय के पास विभिन्न क्रियाकलापों और बुलेटिनों का प्रकाशन, ब्रोशर्स, पैम्पलेटस, न्यूजलैटर्स, वन सांख्यिकी एवं वार्षिक रिपोर्ट, कार्यशालाएं और प्रशिक्षण आदि से वन विज्ञान केंद्रों और प्रदर्शन गांवों के देशव्यापी नेटवर्क के जरिए वानिकी विस्तार अधिदेश के त्वरित प्रसारण हेतु मीडिया एवं प्रकाशन, सांख्यिकी तथा पर्यावरणीय प्रबंधन प्रभाग हैं।

मीडिया एवं प्रकाशन प्रभाग का कार्य भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों द्वारा वानिकी क्षेत्र में वानिकी अनुसंधान निष्कर्षों के प्रसार के लिए विस्तार क्रियाकलापों तथा रणनीतियों को निष्पादित करना है। इस प्रभाग द्वारा भा.वा.अ.शि.प. की विभिन्न अनुसन्धान एवं विकास क्रियाकलापों का मासिक लेखा–जोखा अनुरक्षित किया जाता है और पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को स्थिति से अवगत कराया जाता है। प्रभाग द्वारा भा.वा.अ.शि.प. का न्यूजलैटर तथा ब्रोशर प्रकाशित किया जाता है। भा.वा.अ.शि.प. और उसके संस्थानों की रिपोर्टों को संग्रहित, संकलित, सम्पादित किया जाता है और भा.वा.अ.शि.प. के वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित किया जाता है जिसे संसद के पटल पर प्रस्तुत किया जाता है। राज्य वन विभागों के सहयोग से वन विज्ञान केंद्रों की स्थापना और भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों द्वारा प्रदर्शन गांवों को अपनाने हेतु चयन प्रक्रिया में पर्याप्त प्रगति हुई है। विभिन्न राज्यों में वन विकास केंद्र स्थापित किए गए हैं। देश के विभिन्न पारि–जलवायु क्षेत्रों में आठ प्रदर्शन गांव स्थापित किए गए हैं।

प्रभाग द्वारा राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं और परिषद् तथा उसके संस्थानों में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति का मूल्यांकन किया जाता है। सभी आठ संस्थानों और मुख्यालय से राजभाषा हिन्दी की तिमाही प्रगति रिपोर्ट एकत्र की जाती है जिसे संकलित करने के उपरांत मंत्रालय को भेजा जाता है। प्रभाग द्वारा राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए प्रशिक्षण और कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।

सांख्यिकी प्रभाग को भारत के वानिकी क्षेत्र से संबंधित सूचना एकत्र करने प्रसारित करने का दायित्व दिया गया है। अधिदेश को प्राप्त करने हेतु वर्ष 2010–11 में निम्नलिखित प्रयास किए गए:

1. प्रभाग द्वारा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित भारतीय वानिकी क्षेत्र की रिपोर्ट 2010 पर कार्य किया जा रहा है।
2. आई टी टी ओ प्रायोजित परियोजना भारत के लुग्दी, कागज और हार्डबोर्ड उद्योग का नमूना सर्वेक्षण की समीक्षा करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय उष्णकटिबंधीय प्रकाष्ठ संगठन ने मॉनीटरिंग मिशन के तहत 10 से 12 मार्च 2011 को भा.वा.अ.शि.प. का दौरा किया।
3. वर्ष के दौरान बांस प्रकाष्ठ व्यवसाय बुलेटिन के दो अर्द्धवार्षिक अंक प्रसारित किए गए।
4. ''भारतीय वानिकी सांख्यिकी 2009'' को एकत्रित एवं संकलित करने का काम जारी है।

भा.वा.अ.शि.प.–आई टी टी ओ परियोजना के मानीटरिंग मिशन के दौरान श्री ए.के. बंसल, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. तथा डॉ. स्टीवन ई जॉनसन, सम्पादक एवं संचार प्रबंधक, आई टी टी ओ

5. एन ओ वी ओ डी बोर्ड द्वारा प्रायोजित परियोजना भारत में वृक्षों से प्राप्त तेलबीज पर डाटाबेस का विकास पर कार्य जारी था।

6. एकल परामर्श और अनुसन्धान सलाहकार समितिया की बैठकों के जरिए, वन अनुसन्धान संस्थान सम विश्वविद्यालय के अनुसन्धान स्कालर्स को सांख्यिकीय सहायता दी गई। वन अनुसन्धान संस्थान समविश्वविद्यालय के अनुसन्धान स्कालर्स और विद्यार्थियों के समक्ष सांख्यिकी पद्धतियों पर व्याख्यान दिए गए।

पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग द्वारा पर्यावरण एवं वनों के संबंध में विभिन्न क्षेत्रों में परामर्श दिए जाते हैं जैसे जल विद्युत, खनन, आधारभत सरचना और हाइवे आदि। क्षत्रीय आधार पर परामर्श देने के लिए यह प्रभाग भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों के ई आई ए प्रकोष्ठों के साथ समन्वय भी करता है। मार्च 2011 तक प्रभाग ने ¡ 1193.02 लाख

30 ई आई ए/ई एम पी अध्ययन पूरे कर लिए हैं तथा ¡ 295.81 लाख की 10 परियोजनाएं पूरी की जा रही हैं।

भूमि एवं पारिपद्धति का सतत् प्रबंधन–देशज भागीदारी कार्यक्रम (एस एल ई एम–सी पी पी)

यह, भारत में पारिपद्धति एवं सतत् भूमि प्रबंधन को मुख्य धारा में लाने और बड़े पैमाने पर शुरू करने हेतु नीति और संस्थानिक सुधार के लिए जी ई एफ द्वारा निधिकृत तथा विश्व बैंक द्वारा सहायता प्राप्त परियोजना है। इस परियोजना को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार न अपन हाथ म लिया ह और भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने अगस्त 2009 से इसे कार्यान्वित करना शुरू कर दिया है। परियोजना का उद्देश्य कृषि तथा प्राकृतिक संसाधन रणनीतियों में तालमेल, समन्वय और मॉनीटरिंग के लिए संस्थानिक और नीतिगत संरचना सुदृढ़ करना है जिससे सतत् भूमि प्रबंधन और कृषि उत्पादकता में वृद्धि और पर्यावरणीय समाघात में न्यूनता हो सके। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए परियोजना के तीन घटक हैं, यथा : संस्थानिक और नीति की मुख्यधारा, सतत् भूमि प्रबंधन उपायों को सक्षम बनाने हेतु ज्ञान और प्रबंधन को सुदृढ़ करना तथा सहभागिता प्रबंधन कार्यक्रम, मॉनीटरिंग और मूल्यांकन।

तकनीकी समन्वय

भा.वा.अ.शि.प. के तकनीकी सुविधात्मक संगठन द्वारा समन्वय किया जा रहा है। भा.वा.अ.शि.प. मुख्यालय के विभिन्न प्रभागों और संस्थानों द्वारा देश के विभिन्न भागों में चल रही एस एल ई एम परियोजनाओं के लिए आवश्यक तकनीकी सहायता दी जा रही है।

राष्ट्रीय संचालन समिति की बैठक

एस एल ई एम– सी पी पी की आवश्यकता के एक भाग के रूप में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार के दिशानिर्देश में राष्ट्रीय संचालन समिति गठित की गई है जिसका संघटन इस प्रकार हैः

अध्यक्ष– विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार

सदस्य

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ।

आई जी एफ, मरूभूमि प्रकोष्ठ, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार।

संयुक्त सचिव तथा जी ई एफ आपरेशनल फोलक प्वाइंट इंडिया, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार।

संयुक्त सचिव, यू एन एफ सी सी सी फोकल प्वाइंट, इंडिया, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार। संयुक्त सचिव, सी बी डी फोकल प्वाइंट, इंडिया, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार।

सयुक्त सचिव, गाम विकास मत्रालय, भारत सरकार।

सयुक्त सचिव, जल ससाधन मत्रालय, भारत सरकार।

संयुक्त सचिव, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार। निदेशक एवं जी ई एफ पॉलिटीकल फोकल प्वाइंट इंडिया, डी ई ए, भारत सरकार।

राष्ट्रीय संचालन समिति की पहली बैठक (एन एस सी)

एन एस सी की पहली बैठक पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में 26 मई 2010 को आयोजित की गई। श्री आर.एच. ख्वाजा, विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में डॉ. जी.एस. रावत, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. तथा एन एस सी के सदस्य सचिव, डा. रवीन्द कुमार, उप महानिदशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प. भी उपस्थित थे। बैठक में विभिन्न दायित्वधारियों ने भाग लिया जिनमें ग्रामीण विकास मंत्रालय, कृषि मंत्रालय तथा एस एल ई एम–सी पी पी की सात परियोजनाओं के परियोजना निदेशक और सहयोगी शामिल थे।

विचारमंथन कार्यशाला प्रगति में

आधाररेखा अध्ययन पर विचारमंथन कार्यशाला

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एव शिक्षा परिषद म 29 और 30 सितम्बर 2010 को सतत् भूमि एवं पारिपद्धति प्रबंधन पर आधारभूत अध्ययन हेतु दो दिवसीय विचारमंथन कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विश्व बैंक की मध्यम आकार की परियोजना की परामर्शी नीति सतत् भूमि प्रबंधन में बड़े पैमाने के सुधार, नीति तथा संस्थानिक सुधार और भारत में पारिपद्धति प्रबंधन के संबंध में थी जिसका आयोजन भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किया गया था। इस विचारोत्तेजक कायशाला का उदघ ाटन डा. जी एस रावत, महानिदशक, भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किया गया। कार्यशाला में भाग लेने वालों में एस एल ई एम परियोजनाओं के नोडल अधिकारी और देश भर से भा.वा.अ.शि.प. के आठ संस्थानों के वैज्ञानिक और विशेषज्ञ शामिल थे। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में भा.वा.अ.शि.प. के वरिष्ठ अधिकारियों ने भी भाग लिया।

वित्तीय

परियोजना के लिए कुल अनुमोदित रकम US$ 1,985,267 है, जिसमें से यू एस का सी ई एफ वित्तीय लेखा US$ 981,412 है तथा शेष US$ 1,003,855 को भा.वा.अ.शि.प. द्वारा सह – वित्त पोषित किया जाएगा। टी एफ ओ ने अप्रैल 2010 से मार्च 2011 तक ¡ 49,74,375.00 का व्यय उठाया ह। माच 2011 तक कुल संचयी व्यय मात्र ¡ 82,46,305.10 हुआ है।

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र (एन एफ एल आई सी)

राष्ट्रीय वन पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र, वानिकी और संबद्ध विज्ञानों में दक्षिण तथा दक्षिण–पूर्वी एशिया में प्रलेख संग्रह का सबसे समृद्ध केंद्र है। एन एफ एल आई सी द्वारा सभी प्रकार की पुस्तकालय एवं सूचना सेवाएं मुहैया कराई जाती हैं, जैसे संदर्भ, रेफरल, लेंडिंग, रिप्रोग्राफी, वर्तमान की जानकारी, अंतः पुस्तकालय लोन, मशीन रीडेबल डाटाबेस से सूचना पुनः प्राप्ति आदि। वर्ष के दौरान बाहर जाकर पढ़ने के लिए उपभोक्ताओं को 29,761 पुस्तकें मुहैया कराई गई। जबकि पुस्तकालय में 59,726 प्रलेखों पर विचार–विमर्श किया गया।

एन एफ एल आई सी में प्रलेख संग्रह को अन्य प्रलेख तथा 2731 पुस्तकें शामिल करके समृद्ध बनाया गया ह जिसम स 1210 पुस्तका का ¡ 18.17 लाख में खरीदा गया। एन एफ एल आई सी द्वारा 79 भारतीय तथा 110 पीरियोडीकल के लिए अंशदान दिया जाता है जिसकी लागत ¡ 74.02 लाख है। यहां 325 टाईटिर्ल्स ग्रेटिस प्राप्त होते हैं। एन एफ एल आई सी द्वारा भा.वा.अ.शि.प. के क्षेत्रीय संस्थानों के लिए 14 अत्यंत उपयोगी जर्नल्स की पहुँच कराई जाती है जिस पर ¡ 15.00 लाख की लागत आती है।

वानिकी के नए पुराने अनुसन्धान लेखों तक पहुंच बनाने के लिए संदर्भिका डाटाबेस वन विज्ञान डाटाबेस पर अंशदान किया गया जिस पर ¡ 2.23 लाख की लागत आई।

विभिन्न पहलुओं पर विश्लेषण करने और पहुंच बनाने के लिए एन एफ एल आई सी द्वारा एस सी ओ पी यू एस अंशदान दिया जाता है जो मुख्य समीक्षित साहित्य और उत्तम वेब संसाधनों का सबसे बड़ा सार संग्रह और उद्धरण डाटाबेस है, जिसमें शानदार उपकरण शामिल हैं। इस पर ¡ 8.08 लाख की लागत आई।

एन एफ एल आई सी, भा.वा.अ.शि.प. प्रकाशनों को अपने बुक डिपो के जरिए बेचती है। वर्ष के दौरान राज्य वन विभागों, विश्वविद्यालयों आदि को 665 पुस्तकें तथा 23 वी सी डी बेची गई और ¡ 1,38,791 की आय प्राप्त की गई।

पर्यावर्णीय सूचना पद्धति (इनविस)

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एन एफ एल आई सी में इनविस केंद्र की स्थापना की गई है। वर्ष के दौरान केंद्र ने नए संदर्भों के छः डाटाबेस नए संदर्भों में शामिल किए हैं यथा : भारतीय वानिकी सार–संग्रह, सहभागिता वन प्रबंधन, *प्रोसोपिस ज्यूलीफ्लोरा*, पापलर, पर्यावरण एवं वन, वर्तमान वानिकी साहित्य जो केंद्र की वेबसाइट में यू आर एल से पहुंच योग्य है: www.frienvis.nic.in जर्नलस की विषय सूची के साथ–साथ भारत में वनाच्छादन, राज्य अनुसार और फिर जिलेवार उपलब्ध है। इसके साथ ही वेबसाइट में निकट भविष्य में होने वाले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमीनारों, सिम्पोजिया, प्रशिक्षण कोर्सों आदि को सेट किया गया है।

प्रकाशन : इनविस केंद्र ने, इनविस वानिकी बुलेटिन के दो अंक प्रकाशित किए हैं जिनमें वन उत्पाद रसायन और पर्यावरण एवं वन न्यूज डाईजेस्ट पर तीन अंक शामिल हैं।

4.1 वन विज्ञान केंद्र (वी वी के) पर रिपोर्ट तथा प्रदर्शन ग्राम (डी वी)

वन विज्ञान केंद्र (वी वी के)

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में अपने कार्यक्षेत्र के तहत छः वन विज्ञान केंद्र स्थापित किए हैं। इस समय वन अनुसन्धान उत्तराखण्ड, पंजाब और हरियाणा तथा दो संघ राज्य क्षेत्रों यथाः दिल्ली और चंडीगढ़ में वन विकास केंद्र कार्यरत हैं। सा.वा.पा.पु.के., इलाहाबाद के पश्चात कानपुर में भी वी वी के स्थापित किया जा रहा है।

विभिन्न विषयों पर कई प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं यथा : वन अनुसन्धान और उपयोजन पर जागरूकता कार्यक्रम, प्रसारण, उपयोजन तथा बांस रक्षण, एन टी पी का महत्व, उपयोजन तथा रक्षण, पौधशाला और रोपण तकनीकें, बीजों का संग्रह, भण्डारण, फॉरेस्ट मैन्सुरेशन और वृक्ष–कर्तन तकनीक।

वन विज्ञान केंद्र, कानपुर में सा.वा.पा.पु.के., इलाहाबाद द्वारा 23 से 25 जनवरी 2011 तक वानिकी की चुनौतियां और संदर्श पर प्रदर्शन तथा प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वन मापन पर वी वी के, दिल्ली में प्रशिक्षण के दौरान कार्यक्षेत्रीय प्रदर्शन

वी वी के, चंडीगढ़ में शहरी वानिकी पर प्रशिक्षण

वी वी के, हल्द्वानी में कृषि वानिकी प्रशिक्षण के सहभागी

वी वी के, दिल्ली में वन मापन तथा वृक्ष कर्तन तकनीकों का प्रशिक्षण

वी वी के, होशियारपुर में वन मापन तथा वृक्ष कर्तन तकनीक प्रशिक्षण के सहभागी

प्रदर्शन के तहत प्रशिक्षण

वी वी के, पिंजौर के सहभागी

वी वी के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत जी पी एस पर प्रशिक्षण

कार्यक्षेत्र के तहत राज्य और यू टी में तीन वी वी के स्थापित किए गए हैं। संस्थान द्वारा बीज उत्पादन एवं पौधशाला तकनीक पर वी वी के, कोयम्बटूर में तमिलनाडु में किसानों के साथ अंतःसक्रिय कार्यशाला का अयोजन किया गया, जिसमें तमिलनाडु के विभिन्न जिलों के 200 से अधिक किसानों ने भाग लिया।

एजाडिरैक्टा इंडिका, साइजिजीयम क्यूमिनी, केसिया फिस्टूला, स्वीटेनिया मैक्रोफाइला, स्वीटेनिया महोगनी, स्पाथोडिया, पुंगम तथा *डल्बर्जिया सिस्सू* के 500 से अधिक पौधों का रोपण किया गया जिसमें विश्व पर्यावरण दिवस 2010 के अवसर पर विद्यार्थियों, किसानों, वानिकों आदि ने भाग लिया। तमिलनाडु वन विभाग के कर्मियों के लिए कृन्तक वानिकी पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया और पपैया मेलिया (*पाराकोकस मार्गीनेटस*) द्वारा वृक्ष फसल को नुकसान से बचाने के बारे में किसानों और वानिकों को जानकारी दी गई। किसानों को पौधे वितरित किए गए।

मेलिया डूबिया पर पुस्तक प्रकाशित की गई– मनी स्पिनिंग श्रृंखला–2 तथा वृक्षोत्पन्न तेल बीज, खनन कचरे के पुनरुद्धार के लिए जैवकीय उपाय और रणनीतियों पर पैम्पलेटस और ब्रोशर वितरित किए गए : व.आ. वृ.प्र.सं. के अनुभव, विलवेकम–*एगल मार्मीलोस* बीज तेल, जैव कीटनाशक तथा नाइट्रोजन फिक्सर, कैज्यूरियाना की वृद्धि कारक, प्रकाशित किए गए। स्तरीय रोपण स्टॉक उत्पादन पर पुस्तकों की 1000 प्रतियां पुनः मुद्रित की गई क्योंकि इसके लिए किसानों और वानिकों में भारी मांग थी।

संस्थान द्वारा अवमुक्त किए गए क्लोन्स, आंध्र प्रदेश वन विभाग, गुजरात वन विभाग तथा आंध्र प्रदेश मिल्स को दिए गए।

वृक्ष सूचना केंद्र

क्षेत्र के वानिकों और किसानों द्वारा वृक्षों की संवृद्धि और प्रबंधन तकनीकों, विभिन्न देशज प्रजातियों

वृक्ष सूचना केन्द्र

समस्याओं पर जानकारियां मांगी गई, जिसके लिए सिंगल विन्डो सिस्टम पर फार्म निवेश मुहैया कराएं गए। इन प्रश्नों का उत्तर देने के लिए केंद्र में एक टेलीफोन लगाया गया है।

संस्थान द्वारा सामाजिक वानिकी स्कंध के दक्षिण, केंद्रीय और उत्तरी क्षेत्र के ए सी एफ के साथ परामर्शी बैठक आयोजित की गई। बैठक का आयोजन केरल में एनार्कुलम में सी सी एफ, सामाजिक वानिकी, एनार्कुलम की अध्यक्षता में की गई। बैठक में वी वी के, कुथीरन के कार्यक्रमों और क्रियाकलापों पर विचार–विमर्श किया गया।

संस्थान द्वारा स्तरीय रोपण स्टॉक उत्पादन, जैव–उर्वरक तथा जैवकीय खाद, जलवायु परिवर्तन और वानिकी, वनों की पुनरुत्पादकता और पुष्पण जीवविज्ञान तथा रोपण तकनीकों पर दक्षिणी अण्डमान, मायाबंदर और डिज्लीपुर तथा वी वी के, पोर्ट ब्लेयर, अण्डमान और नीकोबार द्वीप समूहों, वन प्रशिक्षण स्कूल, विम्बर्लेगंज के वानिकी प्रशिक्षार्थियों के साथ कार्यक्षेत्रीय वन अधिकारियों की बैठक का आयोजन किया गया।
200 से अधिक कार्यक्षेत्रीय कर्मियों को प्रशिक्षित किया गया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर ने राज्य में अपने अधिकार क्षेत्र में तीन वी वी के स्थापित किए। संस्थान ने 21 और 22 सितम्बर 2010 को गोवा वन विभाग के 30 वन रेंज अधिकारियों और उप वन अधिकारियों के लिए वी वी के, गोवा में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। उन्हें, ''चंदन की मॉडल पौधशाला पद्धतियां'', पर प्रशिक्षण दिया गया। साथ ही विभिन्न बांस प्रजातियों की वृहत और सूक्ष्म प्रसार तकनीकों से अवगत कराया गया। प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न काष्ठ परिरक्षण तकनीकों का प्रदर्शन किया गया यथा : रस काष्ठ विस्थापन और बाउकेरी प्रक्रिया का आयोजन। काष्ठ परिरक्षण के महत्व और विभिन्न पद्धतियों के बारे में बताया गया और उपकरणों और रसायनों का प्रहस्तन सिखाया गया। बाइस सितम्बर 2010 को गोवा वन विभाग के 25 फॉरेस्ट गार्डस को चंदन की आधुनिक पौधशाला पद्धतियों और कीट प्रबंधन पर प्रशिक्षण दिया गया। उनके सामने आसवन एकक् का प्रयोग करते हुए यूकेलिप्टस की पत्तियों से वोलेटाईल तेल निष्कर्षण का

प्रदर्शन किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को काष्ठ प्रक्रमण का **व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर** ने ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन, वनरोपण, परिरक्षण प्रशिक्षण दिया गया यथा : काष्ठ गुण, सिझाई, परिरक्षण एवं रक्षण। *एकेसिया ओरिकूलीफार्मीस* तथा अन्य द्वितीयक काष्ठ प्रजातियों और छोटे घेरे वाली प्रजातियों की क्षमता वृद्धि के बारे में भी बताया गया। विभिन्न काष्ठ परिरक्षण तकनीकों का प्रदर्शन किया गया यथा : रस काष्ठ विस्थापन और बाउकरी प्रक्रिया तथा यूकेलिप्टस की पत्तियों से बोलाटाईल तेल का निष्कर्षण। प्रशिक्षाणार्थियों के समक्ष आसवन एकक् का प्रदर्शन भी किया गया।

वी वी के, कर्नाटक के क्रियाकलापों के अंतर्गत नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत कृ.आ.वृ.प्रा.सं., बंगलौर में 22 सितम्बर 2010 को कर्नाटक वन विभाग (एफ टी ए टी आई, काडुगोडी) के रेंज वन अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। ए डब्ल्यू टी सी सहित संस्थान के विभिन्न प्रभागों, ऊतक व्यवहार प्रयोगशाला, पौधशाला में दौरा आयोजित किया गया। नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत 12 अक्टूबर 2010 को एफ टी ए टी आई में वी एफ सी प्रेसीडेन्ट और कार्यकारी समिति के सदस्यों को प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान चंदन पौधशाला तकनीकों पर व्याखान दिए गए और प्रदर्शन किया गया। साथ ही काष्ठ परीक्षण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। इसके बाद रस काष्ठ विस्थापन तकनीकों और ब्राउचेरी प्रक्रिया का प्रदर्शन किया गया। नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत 18 नवम्बर 2010 को एफ टी ए टी आई, काडुगोडी में रेंज वन अधिकारियों को भी प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान आधुनिक पौधशाला एवं रोपण तकनीकों पर व्याख्यान दिया गया।

संस्थान ने सुरभित तेल निष्कर्षण की तकनीक का प्रदर्शन किया जिसके लिए वन तकनीकी एवं प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों के समक्ष सुवाह्य आसवन एकक का उपयोग किया गया। यह प्रशिक्षण 16 नवम्बर 2010 को कर्नाटक में वी वी के, काडुगोडी में किया गया।

कुल मिलाकर वन विज्ञान केंद्र, व.अ.के., हैदराबाद के तहत पांच प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। कुल 252 भागीदारों ने विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षण प्राप्त किया यथा : जैवविविधता संरक्षण, तथा शहरी वानिकी। प्रशिक्षण के बारे में आगे तालिका में बताया गया है।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा पांच पूर्वी राज्यों : असम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैण्ड तथा त्रिपुरा में पांच वन विभाग केंद्रों को संचालित किया जा रहा है। भा.वा.अ.शि.प. के दिशा निर्देशों के अनुसार वित्तीय वर्ष 2010–11 में विभिन्न क्रियाकलापों की योजना बनाई गई।

संस्थान ने वी वी के, नागालैण्ड में बांस की पौधशाला और रोपणियों पर 300 से अधिक लाभार्थियों को रोपणियों, खासकर, बांस पर सात प्रशिक्षण दिए जिनमें अग्रगामी कार्मिक, किसान, एन जी ओ तथा ग्रामीण शामिल थे। प्रशिक्षण में शामिल, तकनीकें इस प्रकार थी :– बांस पौधशाला और रोपणियां, बांस की बीमारियों और नाशीकीटों का प्रबंधन, फसल कटान, उपयोजन तथा उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में बांस किस्मों का परिरक्षण, नागालैण्ड के औषधीय पादप/जड़ियां, औषधीय जड़ियां और उनकी गुणवत्ता वृद्धि। उन्हें वन सर्वेक्षण और मानचित्रीकरण में जी पी एस का प्रयोग और वन्यजीव संरक्षण के महत्व के बारे में भी बताया गया।

संस्थान में 2010–11 के दौरान वी वी के, अरुणाचल प्रदेश में दो दिन के दस प्रशिक्षण आयोजित किए जिसमें राज्य के किसानों, विभिन्न विभागों, जैसे, फलोद्यान, कृषि पर्यावरण एवं वन के कर्मियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में शामिल विषय इस प्रकार थे: प्रसारण, आर्किड्स की कृषि, अरुणाचल प्रदेश आर्थिक विकास के लिए पुष्पोत्पादन, बांस तथा बेंत का प्रसारण, खेती और सतत् विकास हेतु प्रबंधन, अरुणाचल प्रदेश के वन तथा वानिकी तथा ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव।

वी वी के परियोजना के तहत आधुनिक नर्सरी की स्थापना चेसा में की गई। वर्ष 2010–11 के दौरान नर्सरी के अनुरक्षण हेतु ¡ 50,000/– (¡ पचास हजार) प्राप्त हुए। विभिन्न बेंत प्रजातियों के बीज खरीदे गए जैसे *केलेमस टेन्यूस, सी. इरेक्टस, सी. ग्रेसीलिस, सी. फ्लैगीलम, सी. फ्लोरीबन्डस, एक्वीलेरिया अगालोचा*

जैसे *बैक्यूरिया स्पीडा, नेरियम* प्रजाति, लीची, प्लूम आदि, जिनके बारे में सामान्य लोग जानना चाहते थे। इसके अलावा कुछ नर्सरी उपकरण भी खरीदे गए।

संस्थान ने विभिन्न विषयों पर चार प्रशिक्षण आयोजित किए जिनमें शामिल थेः– सतत् उत्पादन हेतु कृषि वानिकी और अन्य भूमि उपयोजन पद्धतियां, आधुनिक पौधशाला तकनीकें, एन आर एम में स्वालम्बी वर्ग और जे एफ एम सी के लिए ई पी ए, वानिकी विस्तार और पारिविकास योजना, एन टी एफ पी तथा उनका विपणन, औषधीय पादप– पंचकर्मा उपचार, औषधीय पादपों की कृषि तकनीकें, बांस की रोपण तकनीकें तथा प्रबंधन, बांस के वृहत विस्तार की तकनीकें, फर्नीचर के लिए बांस मूल्य वृद्धि तकनीकें, हस्तशिल्प, सुगंधित स्टिक्स। प्रशिक्षणों से 93 से अधिक भागीदारों को लाभ हुआ।

कार्यक्षेत्रीय दौरे तथा अभ्यास सत्र भी निम्नानुसार आयोजित किए गएः

सहयोगात्मक कृषि (वानिकी, मधुमखी पालन, सुअर बाड़ा, मुर्गी पालन, रबर रोपण फसलें) डॉन बोस्को व्यवसायिक प्रशिक्षण संस्थान, बिश्रामगंज

राम तला में बांस बहुगुणन और रोपण प्रबंधन

डॉन बास्को व्यवसायिक प्रशिक्षण संस्थान में वर्मी कम्पोस्टिंग (कृमि खाद।)

वी वी के मॉडल नर्सरी, त्रिपुरा राज्य वन केंद्र नर्सरी, ईको–पार्क, हर्बल गार्डन।

बांस फर्नीचर, हस्तशिल्प और सुगंधित स्टिक निर्माण एकक। बी ई एन यू , टी एफ डी पी सी, टी आर आई बी ए सी

2010–11 के दौरान हाथीपाड़ा में स्थित मॉडल नर्सरी को जल आपूर्ति विस्तार संयोजन, वर्मी कम्पोस्ट एकक से अनुरक्षित किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने राजस्थान और गुजरात में एक–एक वी वी के स्थापित किए जबकि तीसरे वी वी के, सिल्वासा में दादरा एवं नागर हवेली और दमन में स्थापित की जा रही है।

6 अक्टूबर 2010 तक तीन दिन के वी वी के प्रशिक्षण का आयोजन किया जिसमें 31 फॉरेस्ट स्टाफ तथा 10 किसानों ने भाग लिया। उन्होंने कृषिवानिकी, शुष्क क्षेत्र में फलवृक्षों की खेती, चूहों से नुकसान और नियंत्रण, पौधशाला तकनीकों, कर्तन, ग्राफ्टिंग और उच्च स्तर के बीज उत्पादन, वानिकी में जैव उर्वरकों के उपयोग और कम्पोस्टिंग तकनीकों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया। प्रशिक्षण में व्याख्यान के साथ–साथ स्थलीय प्रदर्शन भी किए गए।

हाई–टेक नर्सरी बिचावल, बीकानेर ने अनुरक्षण कार्य निष्पादन किया यथाः पॉटिंग माध्यम के लिए चावल की भुस्सी, कीटनाशक। हाई–टेक नर्सरी के लिए पी वी सी पाईपों का प्रापण किया गया।

पौधों की वृद्धि बीज वितरणः 2010–11 के दौरान हाई–टेक नर्सरी बिचावल में वी वी के के तहत *प्रोसोपिस सिनरेरिया* और *डल्बर्जिया सिस्सू* की 3000 स्तरीय पौधा उगाइ गइ। इसक तहत 2009–10 में खेजरी (*पी. सिनरेरिया*) की 10,000 पौध उगाई गई थी जिसे 2010–11 में वितरित किया गया और 66 किसानों को सहायता दरों पर बेचा गया।

विस्तार क्रियाकलापः किसानों/दायित्वधारियों के समक्ष वी वी के, बीकानेर के तहत हाई–टेक नर्सरी बिचावल में 6 डिस्प्ले बोर्डों का प्रदर्शन किया गया।

संस्थान द्वारा वन विज्ञान केंद्र, गुजरात के तहत, गुजरात वन विभाग की सहायता से 14 से 16 दिसम्बर 2010 तक वन चेतना केंद्र, भुज (गुजरात) में किसानों और कार्यक्षेत्रीय कर्मिकों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें 38 वन कर्मियों तथा 21 किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में व्याख्यान और कार्यक्षेत्रीय दौरे शामिल थे। प्रशिक्षण के विषय इस प्रकार थेः– कृषिवानिकी के आर्थिक लाभ, कच्छ क्षेत्र में चारा उत्पादन हेतु सिल्वी– पेस्टोरल तकनीकें, कच्छ क्षेत्र में घास किस्में और रेंज प्रबंधन, वृक्ष सुधार कार्यक्रम, मृदा एवं जल संरक्षण तकनीकें, कच्छ क्षेत्र की लवणीय भूमियों के लिए वनीकरण तकनीकें, वानिकी विस्तार के लिए

14 दिसम्बर 2010 को वन चेतना केंद्र, भुज में वी वी के प्रशिक्षण

जागरूकता तथा आर्गेनिक कृषि और कम्पोस्टिंग तकनीकें। प्रशिक्षण में व्याख्यान तथा स्थलीय प्रदर्शन आयोजित किए गए। कार्यक्षेत्रीय दौरों के दौरान भागीदारों ने वृक्ष प्रजातियों के वानस्पतिक विस्तार, हाईटेक नर्सरी में वर्मीकम्पोस्टिंग, भुज्ज, गुग्गल रोपण एवं नर्सरी, वन्डाई पर आधुनिक तकनीकें सीखी। वी वी के प्रदर्शन भागीदारों को शु.व.अ.सं. द्वारा मोचाराई, भुज्ज में विकसित सिल्वी–पेस्टोरल मॉडल का दौरा भी कराया गया।

हाईटेक नर्सरी, भुज में 15 दिसम्बर 2010 को वृहत प्रवर्धन तकनीकों पर प्रशिक्षण

वी वी क प्रशिक्षण सहभागियों न 15 दिसम्बर 2010 को मोचाराइ म शु.व.अ.सं. द्वारा विकसित सिल्वी–पेस्टोरल मॉडल का दौरा किया

हाईटेक नर्सरी, छिपार्दी, बीडी, राजकोट में अनुरक्षण कार्य निष्पादित किया गया। हाईटेक नर्सरी के लिए गार्डन पाईप, फोगर तथा सह–सामग्री, उर्वरक तथा कीटनाशकों का प्रापण किया गया।

अनुसन्धान और विकास केंद्र, राजकोट में वी वी के, के तहत 2010–11 में रियायती दरों पर दायित्वधारियों में वितरण करने हेतु *कार्डिया मिक्सा, कैज्वारिना इक्विसिटीफोलिया* और *यूकेलिप्टस* हाईबड के बीज / कर्तनें तथा *जिजीफस मार्टियाना, एम्ब्लिका आफिसिनेलिस* के ग्राफ्टिंग बडिंग में 3000 उच्च स्तर के पौधे उगाए गए। साथ हाईटेक नर्सरी में प्रत्येक प्रजाति के 500 पौधे उगाए गए।

अनुसन्धान एवं विकास केंद्र, राजकोट में किसानों/दायित्वधारियों के समक्ष वी वी के के तहत 6 डिस्प्ले बोर्ड प्रदर्शित किए गए।

खानवेल (दादर एवं नागर हवेली तथा दमन) प्रस्तावित वन विज्ञान केंद्र

वन विज्ञान केंद्र की स्थापना एवं क्षमता वृद्धि

डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून तथा डॉ. बिलास सिंह, अनुसन्धान अधिकारी ने सिलवासा, दादर एवं नागर हवेली का दौरा किया और 28 जनवरी 2011 को डी सी एफ सिलवासा ने भा.वा.अ.शि.प. के अधिकारियों: श्री कमल दत्ता, सी एफ (दमन) और कार्यप्रभारी अधिकारी डी सी एफ (टी), सिलवासा, श्री दिलीप सिंह मंगरोला, ए सी एफ (वन्य), सिलवासा, दादर एवं नागर हवेली एफ डी के साथ एम ओ यू पर हस्ताक्षर करने के संबंध में बैठकें की तथा एम ओ यू और वी वी के वर्क्स पर हस्ताक्षर हेतु टेलीफोन, फैक्स, ई–मेल के जरिए नियमित पत्र व्यवहार किया। इन अधिकारियों ने

प्रस्तावित नर्सरी और वी वी के प्रदर्शन केंद्र, खानवेल (जो सिलवासा से करीब 19 कि.मी. दूर है) का दौरा किया। नर्सरी में दौरे से स्पष्ट हुआ कि वी वी के प्रदर्शन केंद्र को खोलने से पहले वर्तमान प्रस्तावित वी वी के भवन की मरम्मत करना आवश्यक है।

मॉडल एम ओ यू को अनुमोदन के लिए श्री कमल दत्ता, सी एफ क समक्ष पस्तुत किया गया। कित वी वी क, खानवल का एम ए आ य, डी एन एच पाधिकारी द्वारा अभी तक अनुमोदित नहीं किया गया है। इसलिए एफ डी, डी एन एच द्वारा शु.व.अ.सं. को वी वी के, खानवल म क्रियाकलाप करन की अनमति नही दी गइ ह**बृहत**

संचार सामग्री तथा मीडिया

शु.व.अ.सं. की सूचना पुस्तिकाएं: (4750 संख्या में) हिन्दी भाषा में प्रकाशित की गई जिनका व्यापक प्रसार किया गया और किसानों/दायित्वधारियों/ संगठनों में वितरित किया गया। वी वी के बीकानेर और राजकोट तथा प्रदर्शन ग्रामों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों को व्यापक रूप से प्रसारित किया गया और दैनिक समाचार पत्र (हिन्दी और गुजराती) में प्रकाशित किया गया।

भा.वा.अ.शि.प. की टीम की डी सी एफ (टी), सिलवासा क साथ बैठक

प्रस्तावित वी वी के, सिलवासा के लिए भवन और कार्यस्थल

शु.व.अ.सं. दर्पण : शु.व.अ.सं. के विस्तार क्रियाकलापों में वी वी के तथा प्रदर्शन ग्राम और विस्तार को शु.व.अ.सं. दपर्ण के विशेषांकों (तिमाही मैग्जीन हिन्दी, भाग–12 वर्ष 8) में उच्च स्थान दिया गया।

शु.व.अ.सं. प्रकाशन : खजडी मृत्यताः राजस्थान में कारण, नुकसान और उपाय तथा राजस्थान में खेजड़ी मृत्यता पर क्रमशः 12800 पैम्पलैट्स (4600 अगजी आर 8200 हिन्दी) पकाशित किए गए।

30 डिस्प्ले बोर्ड तैयार किए (प्रत्येक 15) जो पादपों में विभिन्न पोषकों की कमी और मरूस्थल की जीवन रेखाः खेजड़ी कल्पवृक्ष को बचाने का संकल्प पर आधारित थे।

शु.व.अ.सं. कलेन्डर 2010 अल्पावधि प्रशिक्षण कोर्स और अन्य क्रियाकलाप।

निम्नलिखित लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया गया :

जैवविज्ञानीय विविधता के लिए अंतर्राष्ट्रीय वर्ष 2010।

जून विश्व पर्यावरण दिवस को कई प्रजातियां, एक पृथ्वी एक भविष्य।

सत्रह जून 2010 को रेगिस्तानीकरण का मुकाबला करने हेतु विश्व दिवस।

प्रोसोपिस ज्यूलीफ्लोरा नामक सारसंग्रह–शुष्क भूमियों में सम्पन्नता लाने वाला वृक्ष। *प्रोसोपिस ज्यूलीफ्लोरा* अतीत वर्तमान और भविष्य, पेज 36, काजी, जोधपुर, आई सी ए आर प्रकाशन।

हि.व.अ.सं., शिमला ने दो वी वी के स्थापित किए हैं जिनमें से एक हिमाचल प्रदेश और एक जम्मू और कश्मीर में है। वी वी के हिमाचल प्रदेश के तहत संस्थान ने निम्नलिखित में प्रत्येक पर 500 पम्पलटस विकसित किए: *एम्ब्लिका आफीसिनेलिस, प्लान्टानस ओरियन्टेलिस, पाइनस जिरारडियाना, इलेगनस अंगुस्टीफोलिया*। इसक अलावा *पाइकोरिजा करूआ* आर *सीडरस देवदार* पर 200 पुस्तिकाए (पत्यक) तयार की गइ।

संस्थान द्वारा एस एफ डी के कार्यक्षेत्रीय कर्मियों और किसानों के लिए निम्नानुसार प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए गए:–

वानिकी/कृषि वानिकी प्रजातियों पर किसानों की प्राथमिकता जानने के लिए 9 मई 2010 को नलानी गांव, मण्डी में कार्यशाला/ग्रामीणों की बैठक का आयोजन किया गया।

वानिकी हस्तक्षेप दावा निम्नीकृत क्षेत्रों के पुनर्स्थापन पर 4 फरवरी 2011 को कृषि विज्ञान केंद्र, सारू, चम्बा, हि. प्र. में प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें हमारे संस्थानों, फॉरेस्ट गार्डस, डिप्टी रेंजर्स वन प्रभाग चम्बा, डलहोजी, छुराहा और उससे जुड़े हुए क्षेत्रों के 60 भागीदारों ने भाग लिया।

शीतोष्ण औषधीय पादपों की खेती : ग्रामीण आय के वैविध्यकरण और वृद्धि पर 19 फरवरी 2011 को साई रोपा सैन्ज कुल्लू, हि.प्र. में एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें हमारे संस्थान के 40 भागीदार शामिल हुए जिनमें राज्य फॉरेस्ट गार्डस, उन्नतिशील किसान, महिला मण्डल के प्रतिनिधि, युवक मण्डल और आसपास के क्षेत्रों के गैर सरकारी संगठन भी शामिल थे।

उत्पादकता वृद्धि के लिए कृषि वानिकी तथा एन डब्ल्यू एफ पी प्रौद्योगिकियों पर प्रशिक्षण और ज्ञानवर्धक दौरों के लिए 14 से 18 फरवरी 2011 तक आयोजित किया गया जिसमें जम्मू, मनाली, शिलारू तथा सोलन क्षेत्रों के 35 उन्नतशील किसानों ने भाग लिया। उन्हान हि.व.अ.स., भा.वा.अ.शि.प. तथा यू एच एफ, नाउनी के वैज्ञानिकों के साथ सूचनात्मक विचार–विमर्श किया और हरा हर्बल गार्डन, गंगानगर, धौलाकुआं, वन अनुसन्धान संस्थान, म्यूजियमों, वन विज्ञान केंद्र, ऋषिकेश और हरिद्वार का दौरा किया।

एफ आर एस बुंधार, जगतसुख (मनाली)

निराई और सिंचाई तथा होइंग द्वारा विभिन्न एफ आर एस में प्रदर्शन पौधशाला का अनुरक्षण किया।

फील्ड रिसर्च स्टेशन टाबू में शीत रेगिस्तान से संबंधित वानिकी गतिविधियों को देखने और समझने के लिए आए विभिन्न विशिष्ट व्यक्तियों और दायित्वधारियों को सुविधा दी तथा 30 मी.x 3मी. पक्के रास्ते का निर्माण किया। वानिकी वृक्ष प्रजातियों/फलोद्यान वृक्षों पौधशाला क्यारियों में औषधीय पादपों को उगाने के विचार को महत्व देने के लिए वृक्ष भूखण्डों के भीतर और आसपास 15 मी^{2} के भागों को तैयार किया गया। मिश्रित सामग्री के रूप में औषधीय पादप जैसे सलम पांजा (*डैक्टीलारिया हेटीग्रिया*) कारू (*पाइकोरिजा कुरूआ*): जंगली लहसुन (*एस्फोडिलस टेनुफोलस*), जंगली प्याज (*अजैनिया इंडिका*) तथा रतनजोट *(अर्नेबिया बेंथमी)* को वनों से एकत्र करके क्यारियों में लगाया गया।

वर्मी कम्पोस्ट तैयार किया गया और विभिन्न दायित्वधारियों को दिखाने के लिए सुरक्षित रखा गया।

अन्य विस्तार क्रियाकलाप, उपकरण, कार्यालय फर्नीचर, टेलीफोन

कृषिवानिकी प्रजातियों, औषधीय पादपों, केनेड में वर्षा जल जमा करने हेतु जागरूकता के लिए भंगरोनू और सुंदरनगर के आसपास के क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। सिल्वर–फर बीज निष्कर्षण में राज्य वन विभाग की सहायता की गई।

टिनोस्पोरा (50 की संख्या), *बहुनिया वेरीगाटा* (50 की संख्या), *ग्रेविया आप्टीवा* (50 की संख्या) और *प्रूनस* प्रजाति (100) की कर्तनों को उगाया गया।

कार्बनिक कृषि तथा वर्मी कम्पोस्ट का महत्व बताने के लिए पूंग गांव में बैठक की गई।

वी वी के, जम्मू के तहत संस्थान ने चीनार पर पैम्पलेटस की 500 प्रतियां तैयार की। वन उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकियों और अनुसन्धान उपायों के अनुप्रयोग पर 17 जनवरी 2011 को कथुवा वन प्रभाग के कैम्पस में एक दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया

गया जिसमें फॉरेस्ट गार्डस, फॉरेस्टरों सहित राज्य वन विभाग के 30 भागीदार शामिल हुए।

प्रदर्शन पौधशाला की स्थापना

पौधशाला क्यारियों में उगाने के लिए ग्रामीणों/बाजार से हरड़ (20 कि.), बेहडा (20कि.) तथा यूकेलिप्टस के बीज प्राप्त किए।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून से पौधशाला क्यारियों में बोने के लिए विभिन्न क्लोन्स की 5000 कर्तनें प्राप्त की गई।

नागवाणी मे 1250 वर्ग मीटर क्षेत्र में पौधशाला स्थल बनाने के लिए वन अनुसन्धान स्टेशन स्थापित किया गया।

यूकेलिप्टस बीजों को 70 वर्ग मीटर, हरर बीजों को 20 वर्ग मीटर तथा बेहडा बीजों को 20 वर्ग मीटर क्षेत्र में रेखीय बोआई से उगाया गया।

20 वर्ग मीटर क्षेत्र में बक राइजोम को एकत्रित तथा संग्रहित किया गया।

प्रदर्शन ग्राम (डी वी)

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

प्रदर्शन ग्राम, श्यामपुर

वानिकी उत्पादों, छोटे पैमाने के उद्योगों से जुड़े लोगों और विद्यार्थियों को समय–समय पर विभिन्न विषयों का ज्ञान कराने हेतु किसानों और एन जी ओ को प्रशिक्षण देने के लिए वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा श्यामपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड में एक प्रदर्शन ग्राम की स्थापना की गई है।

देहरादून के पास श्यामपुर गांव में भगवान ग्रामोद्योग समिति, श्यामपुर गांव के सहयोग से एक मॉडल नर्सरी विकसित की गई है।

नर्सरी की संरचना इस प्रकार है:– कम
लागत का मिस्ट चेम्बर – एक
प्रसारण एकक् – एक
पूरी पाईप फिटिंग के साथ वाटर टैंक –एक
0.5 एच पी मोटर के साथ मोटर हाउस –एक
माउन्टेड एंगल आयरन बेडस – आठ
शेड हाउस – एक
बीज सुखाने का प्लेटफार्म – एक
वर्मी कम्पोस्ट एकक् – एक
रूट ट्रेनर्स –95 ब्लाक–200सी सी (16 सेल्स)

उपलब्धियां

पौधशाला में प्रतिवर्ष 20,000 पौधे उगाए और अनुरक्षित किए जाते हैं।

वन अनुसन्धान संस्थान द्वारा प्रदर्शन ग्राम को 4000 पौधे–(औषधीय और वानिकी) दिए गए।

पच्चीस हजार पादपों का अनुरक्षण – औषधीय और वानिकी प्रजातियां

दस हजार पादपों का वितरण– बनियावाला, नयागाव, गणशपर, सलाकइ, अम्बीवाला, सुक्लावार, श्यामपुर (देहरादून जिला) के किसानों को उनके कृषि खेतों में उगाने के लिए अधिकांश

एलो वेरा और सतावर के पौधे दिए गए।

प्रदर्शन ग्राम सैदूपुर (सी एस एफ ई आर द्वारा स्थापित)

प्रदर्शन ग्राम स्थापित करने का उद्देश्य, प्रदर्शन के लिए कम लागत का नर्सरी मॉडल विकसित करना है। कार्य स्थल में पौधशाला के लिए वर्मी कम्पोस्टिंग एकक्, प्रशिक्षण शेड, बांस उपचार टैंक, हैण्डपम्प विकसित किया गया है। ग्रामवासियों की रुचि के अनुसार टीक, बेंत, अनोला, इमली, जैट्रोफा और औषधीय प्रजातियों, जैसे सतावर, कालमेघ, चित्रक, अश्वगंधा की पौध उगाने का कार्य प्रगति पर है।

प्रदर्शन ग्राम (सैदूपुर) में किसानों के लिए निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए:

बांस की परिरक्षण तकनीकें: 15 नवम्बर 2010 वर्मी कम्पोस्टिंग पर 31 जनवरी 2011 को प्रदर्शन/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुख्य वानिकी प्रजातियों के लिए रोपण एवं पौधशाला तकनीकों पर 20 सितम्बर 2010 को प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

कांडीयूर प्रदर्शन ग्राम

ग्यारह किसानों के खेतों में कोपिया, बैंगन और टमाटर के साथ मिश्रित फसल के रूप में *यूकेलिप्टस, एलन्थस,* टीक तथा कैश्यूनट को कृषिवानिकी मॉडलों में उगाया गया। कांडीयूर तथा आसपास के गांवों में 5000 पौधे वितरित किए गए।

संस्थान में, तमिलनाडु वन विभाग के सहयोग से तमिलनाडु और पांडेचेरी के किसानों के लिए 24 और 25 फरवरी 2011 तक तीसरा वृक्ष – उपजाओ मेला आयोजित किया गया।

मेले के भाग के रूप में वृक्ष फार्मिंग की सर्वोत्तम पद्धतियां और रोपण तकनीकों का प्रदर्शन आयोजित किया गया जिसमें तमिलनाडु और पांडेचेरी के विभिन्न भागों से 700 से अधिक किसानों के अलावा तमिलनाडु वन विभाग के अधिकारियों और स्टॉफ, काष्ठ आधारित उद्योगों के प्रतिनिधियों, अनुसन्धान एवं अकादमिक संस्थानों के वैज्ञानिकों और संकायों ने भाग लिया।

विलवेकम– *एगल मार्मीलोस* बीज तेल, जैव कीटनाशक को *ए. मार्मीलोस* तथा एन. फिक्सर फ्रेंकिया (कैज्यूरियाना का वृद्धिकारक) से विकसित कर किसानों को दिया गया।

प्राईमरी स्कूल कांडीयूर प्रदर्शन ग्राम के बच्चों के लिए 31 मार्च 2011 को पर्यावरण रक्षण पर जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें कुल 36 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

कांडियूर प्रदर्शन ग्राम में 30 मार्च 2011 को प्राइमरी स्कूल के स्कूली बच्चों के लिए ''पर्यावरण रतन'' पर एक जागरूकता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

सत्रह सितम्बर 2010 को प्रदर्शन ग्राम की श्री शक्ति महिला वर्ग के लिए अंतःसक्रिय बैठक का आयोजन किया गया जिसमें विस्तार अधिकरी, का.वि.प्रौ.सं., पंचायत विकास अधिकारी, गांव के चुने हुए सदस्यों और प्रदर्शन ग्राम के श्री शक्ति महिला वर्ग की 25–30 सदस्यों ने भाग लिया।

येंटाग्नाहल्ली पंचायत में 27 सितम्बर 2010 को प्रदर्शन/अंतःसक्रिय बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में येंटाग्नाहल्ली पंचायत के सभी 23 चुने हुए सदस्यों ने भाग लिया। सभी सदस्यों की उपस्थिति म का.वि.प्रौ.स. तथा डोड्डेकेरनाहल्ली, प्रदर्शन ग्राम के बीच आपसी सूझबूझ के ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर विभिन्न वृक्ष प्रजातियां जैसे चंदन, यूकेलिप्टस, सिल्वर ओक, बांस आदि के पौधों का वितरण किया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

टीक निष्पत्रक और लीफ स्केल्टोनाइजर के प्रतिरोध का प्रदर्शन करने के लिए उ.व.अ.सं., जबलपुर के प्रदर्शन ग्राम, मोइयानाला में मध्य प्रदेश मूल की टीक का रोपण किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर

प्रदर्शन ग्राम, सालावास (जोधपुर)

स्थापना और क्षमता वृद्धिः 14 अक्टूबर 2010 को टिकेश्वर भकारी, सालावास में प्रदर्शन ग्राम की स्थापना हेतु निदेशक, शु.व.अ.सं. तथा सरपंच, सालवास में

शु.व.अ.सं. के वैज्ञानिकों ने तकनीकी प्रदर्शन के लिए 14 अक्टूबर 2010 को प्रस्तावित प्रदर्शन ग्राम स्थल टिकेश्वर भकारी, सालावास, जोधपुर का दौरा किया

सरपंच श्री ओम राम पटेल न प्रदर्शन ग्राम स्थल टिकेश्वर भकारी, सालावास, जोधपुर म 14 अक्टूबर 2010 कारोपण समारोह क दौरान पौध रोपण करत हुए

डॉ. टी.एस. राठौड़, निदेशक, शु.व.अ.सं., जोधपुर प्रदर्शन ग्राम प्रदर्शन केंद्र भवन, टिकेश्वर भकारी, सालावास, जोधपुर का 14 अक्टूबर 2010 को उद्घाटन करते हुए

निदेशक, शु.व.अ.सं., जोधपुर तथा टिकेश्वर भकारी, सालावास, जोधपुर के सरपंच, सालावास गांव द्वारा एम ओ यू पर 14 अक्टूबर 2010 को हस्ताक्षर किए गए

एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए। समारोह में शु.व.अ.सं. के कर्मियों और सालवास के ग्रामीणों द्वारा विभिन्न वृक्ष प्रजातियों के पचास पौधों का रोपण किया गया। निदेशक, शु.व.अ.सं., जोधपुर तथा सरपंच, सालावास गांव, जोधपुर द्वारा प्रदर्शन ग्राम के प्रदर्शन हॉल और प्रदर्शन सामग्री का उद्घाटन किया गया।

प्रदर्शन स्थलः पदर्शन उददश्या आर किसानों/दायित्वधारियों के लिए उच्चकोटि के बालवृक्ष उत्पादन तथा एग्रोशेड कम्पोस्ट एकक् तथा अन्य नर्सरी क्रियाकलापों के लिए एस एफ डी नर्सरी, सालावास, जोधपुर में स्थल चयन किया गया। वन संवर्धन तथा वन पारिस्थितिकी प्रभाग, शु.व.अ.सं., जोधुपर के जरिए कम्पोस्ट चेम्बर तथा एग्रोशेड नेट हाउस और मृदा संरक्षण के कार्य किए जा रहे हैं।

मृदा और जल संरक्षण उपायों का निष्पादन करने तथा वन चारागाह मॉडल अपनाने के लिए टिकेश्वर भकारी, सालावास में 7 हैक्टेयर का क्षेत्र चयनित किया गया। चौदह अक्टूबर 2010 को सालावास ग्राम पंचायत के साथ एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए। इसके बाद नवम्बर 2010 में सालवास नर्सरी से जुड़ी हुई 1.5 है. भूमि को प्रदर्शन स्थल के लिए चिन्हित किया गया।

एम ओ यू (डी एफ ओ जोधपुर) के जरिए फरवरी 2011 को सालवास ग्राम पंचायत की भूमि (1800 एम^2) को भी प्रदर्शन के लिए शामिल किया गया।

शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर में 4 मार्च 2011 को एक दिवसीय प्रदर्शन ग्राम प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें 35 भागीदारों (12 वन कार्मिक तथा 23 किसानों) ने भाग लिया। उन्होंने विभिन्न नर्सरी तकनीकों और वी ए एम, कम्पोस्टिंग मैनुअर–फॉर्मिंग तकनीकों की जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण को मुख्यतः प्रदर्शन के अनुरूप तैयार किया गया।

शु.व.अ.सं, जोधपुर में 4 मार्च 2011 को
प्रदर्शन ग्राम प्रशिक्षण का उद्घाटन

प्रायोगिक नर्सरी, शु.व.अ.सं. में 4 मार्च 2011 को सहभागियों
के समक्ष कम्पोस्टिंग तकनीक का प्रदर्शन

प्रदर्शन प्रशिक्षण क सहभागिया को नर्सरी क औषधीय उद्यान,
शु.व.अ.सं. का 4 माच 2011 का दौरा करत हुए

नर्सरी, शु.व.अ.सं. में 4 मार्च 2011 को प्रशिक्षुओं को नर्सरी
में वी ए एम अनुप्रयोग का प्रदर्शन

हि.च.अ.सं., शिमला

प्रदर्शन ग्राम, लानाबाका, हिमाचल प्रदेश

i- स्वीकृत क्रियाकलापों के लिए योजना और कार्यान्वयन हेतु लोगों के साथ बैठकें:

क्रियाकलापों की योजना बनाने के लिए प्रदर्शन ग्राम में कैम्प कार्यशाला/ग्रामीणों की बैठक का आयोजन।

ii- तकनीकी प्रदर्शन भू–खण्डों की स्थापना:

प्रदर्शन के लिए अंतः फसलीय मॉडलों की स्थापना

प्रदर्शन के लिए *एलो वेरा* तथा *वैलीरियाना जटामांसी* के साथ *डेन्ड्रोकेलेमस हेमिल्टोनाई* की अंतःफसलों की स्थापना।

मिश्रित प्रदर्शन रोपणों की स्थापना:

डेन्ड्रोकेलेमस हेमिल्टोनाई, पॉलोवियाना फॉरट्यनी, ग्रेविया आप्टीवा तथा *एम्ब्लिका आफीसिनेनसिस* (500) का (3X3 एम^2 की दूरी पर) मिश्रित प्रदर्शन रोपण की स्थापना की गई।

iii- पौधशाला विकास तथा पौधशाला और रोपण का अनुरक्षण:

पौधशाला तथा पॉलीहाउस क्यारियों के लिए रेत, सीमेंट बैग, मृदा, एफ वाई एम का प्रापण।

मख्य क्यारिया स पॉलीहाउस तक (60 मी. लम्बी X 3मी. चौड़ी) कंक्रीट रोड बनाई गई।

छारमा (25 कि.), कालूटिया (20 कि.), रिब्स भोजपत्र (5 कि.) तथा इफीडरा (10 कि.), राइब्स (10) के बीज एकत्र किए गए।

खारू, जंगली प्याज, रतनजोत के औषधीय पादपों को एकत्रित किया गया।

पचास वर्ग मीटर की नर्सरी क्यारियां तैयार की गई।

आफिस, गेस्ट हाउस और टाइप 1 क्वार्टरों में वाटर चेनल की मरम्मत की गई।

नियमित निराई, होइंग तथा सिंचाई से प्रदर्शन पौधशाला का अनुरक्षण किया गया।

नियमित छंटाई, होइंग तथा सिंचाई से प्रदर्शन रोपणियों का अनुरक्षण किया गया।

व.उ.स., रांची

प्रदर्शन ग्राम–हप्पामुनी में निम्नलिखित प्रदर्शन किए गए :–

क. तंगहाल स्थलों के पुनर्स्थापन हेतु प्रदर्शनः

झारखण्ड के गुमला जिले के गांव हप्पामुनी को तंगहाल स्थलों के पुनरुद्धार के लिए तकनीकें प्रसारित करने हेतु प्रदर्शन ग्राम के रूप में चुना गया। गांव में बदहाल स्थलों के बड़े भू–खण्ड हैं जिनमें उथली गहराई, चट्टानी धरातल, विस्तृत चट्टानें जिनकी जलग्रहण क्षमता बहुत कम है, उपलब्ध पोषकों के साथ मृदा में कार्बनिक पदार्थों की कमी आदि की समस्याएं हैं। स्थलीय गुणवत्ता का आकलन करने तथा पादप वृद्धि रोकने वाले कारकों की पहचान के लिए मृदा नमूने लेने हेतु 2009 के दौरान कार्यक्षेत्रीय सर्वेक्षण किए गए। *बैम्बूसा न्यूटन्स, यूकेलिप्टस टेरिटीकार्निस* तथा *टैक्टोना ग्रैन्डिस* और पिट मृदा उपचारों के बाद जून 2009 में रोपण कार्य पूरा कर लिया गया।

30 जून 2009 को तंगहाल स्थलों के पुनरुद्धार पर कार्यशाला/प्रदर्शन का आयोजन किया गया जिसमें 65 भागीदार शामिल थे। अर्थात, ग्रामीण, एस एफ डी के कार्यक्षेत्रीय कार्मिक, एन जी ओ तथा हप्पामुनी के ग्रामवासी।

रोपण विवरण एवं मृदा सुधार

क्र. सं.	प्रजाति	क्षेत्र रोपित बालवृक्षों की संख्या	गड्ढे का आकार	दूरी	उपचार
1.	यूकेलिप्टस क्लोन	0.40 हे., 325	60स.मी. X 60 स.मी. X 60 स.मी. =0.216 मी^{3}	3मी X 3मी	धरातलीय मृदा 2.5 ft^3 + 1.6 ft^3 गढ्ढे की मृदा + FYM 1.0 ft^3 + चावल की भूसी 1.25 ft^3 + 100 ग्रा. चूना रोपण से पहले तथा N22 ग्रा. (जैसे यूरिया DAP) + P_2O_5 100 ग्रा. (जैसे DAP) + K50 ग्रा. (जैसे MOP) + Zn 2.0 ग्रा. + Mn 2.0 ग्रा. + B 2.0 ग्रा. + Cu 0.50 ग्रा. + Fe 1.0 ग्रा. + Mo 0.15 ग्रा. के उनके लवण + क्लोरो फाइरीफोस प्रथम तथा द्वितीय वर्ष में 2 बार
2.	टैक्टोना ग्रैन्डिस	0.50हे., 340	उप	3मी X 3मी	उपरोक्त
3.	बैम्बूसा न्यूटन्स 1साल (बी पी एस)	0.26 हे., 81	75स.मी. X 75 स.मी. X 75 स.मी. =0.422 मी^{3}	5मी X 5मी	धरातलीय मृदा 5.0 ft^3 + गढ्ढे की मृदा 3.0 ft^3 +FYM 2.0 ft^3 + चावल की भूसी 2.5 ft^3 + 200 ग्रा. चूना रोपण से पहले तथा NPK + सूक्ष्मपोषक (*यूकेलिप्टस* तथा *टी. ग्रैन्डिस* में मात्रा को दोगुना कर दिया जाए)

ख. बांस प्रसार तकनीकों का प्रदर्शनः

व.उ.सं., रांची द्वारा अपनाए गए प्रदर्शन ग्राम–हप्पामुनी में बांस प्रसार एकक् स्थापित करने का प्रयास किया गया, जिसका उद्देश्य ग्रामीणों और अन्य कार्मियों को अद्यतन तकनीकों की जानकारी देना और बड़ी मात्रा में बी पी एस बनाने हेतु शिक्षित करना था।

ईंट की कच्ची दीवार के साथ चौदह रेत की क्यारियां (साईज 0.50मी. X 1.25मी. X 3.5मी. प्रत्येक) बनाई गईं। परास्थनिक संरक्षण उद्यान तथा व.उ.सं. के बांस स्टेम का उपयोग वर्ष भर प्रदर्शन के लिए किया गया। पॉली बैग्स में जड़ीय कर्तनों को बदला गया जिनमें कार्बनिक पदार्थ और पोषक तत्व शामिल थे।

हप्पामुनी नर्सरी में 2009 और 2010 के दौरान 35 ग्रामीणों ने इस प्रदर्शन प्रशिक्षण में भाग लिया। कुछ गामीणों ने अग्रिम तकनीकों के जरिए बांस का उत्पादन शुरू कर दिया है।

कल्म कर्तन से प्रजाति प्रसारण

बैम्बूसा बाल्कुआ, बैम्बूसा बैम्बू, बैम्बोसा न्यूटन्स, बैम्बूसा स्ट्रिआटा, बैम्बूसा वुल्गेरिस (हरा) *बैम्बूसा वुल्गेरिस* (जामनी), *डैन्ड्रोकैलेमस एस्पर* तथा *डैन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस*।

ग. प्रदर्शन ग्राम की वर्मी कम्पोस्टिंग एकक् :

भारत को अपनी बढ़ती हुई आबादी के अनुसार खाद्य उत्पादन बढ़ाना है। गहन कृषि की सतत् पद्धतियों पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अत्याधिक उपयोग किया जा रहा है जिससे मृदा गुणवत्ता और क्षमता में कमी आ रही है। विश्व स्तर पर यह खतरे की घंटी है। खासकर कृषि और पर्यावरणीय वैज्ञानिकों को इस पर सोचना है। इसलिए मृदा गुणवत्ता को पुनः प्राप्त करना अति आवश्यक है।

कार्बनिक खादों की सहायता से खाद्य और पर्यावरणीय सुरक्षा करनी है। कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट जैसी आर्गेनिक खादें, वृहत और सूक्ष्म पोषक तत्वों की आपूर्ति करने के साथ–साथ सतत् कृषि उत्पादन के लिए भौतिक रासायनिक तथा जीवविज्ञानीय मृदा गुण सुरक्षित रखते हैं। झारखण्ड में गुमला, लोगार्डगा तथा लथेहर जिले मुख्य कृषि क्षेत्र हैं जहां कार्बनिक पदार्थों की उपलब्धता उच्च है। सभी बातों को ध्यान में रखते हुए व.उ.सं., रांची ने प्रदर्शन ग्राम, हप्पामुनी, गुमला में वर्मी कम्पोस्ट

एकक् स्थापित किया है जिसका आकार और लागत 70′x 30′ x 7.5′ @ ` 1,85,929/- है। यह किसानों को प्रशिक्षण देने तथा किसानों को वर्मी कम्पोस्टिंग से अवगत कराने के बारे में है। वर्मी कम्पोस्टिंग एकक् में शामिल हैं: वर्मी कम्पोस्टिंग क्यारियां, डिकम्पोस्टिंग टैंक तथा वर्मी वाश कलक्शन टंक। वर्मी कम्पास्टिग उत्पादन के लिए कृषि का कचरा, घास–पात और फार्मयार्ड मैनुअर, कच्ची सामग्रियां हैं। एकक् की उत्पादन क्षमता

3–4 टन है, जो प्रयुक्त सामग्री पर निर्भर करता है। वर्मी कम्पास्ट उत्पादन क लिए कचुए, *इसीनिया फिटीडा* का उपयोग किया जा रहा है। वर्मी कम्पोस्टिंग और

बांस प्रवर्धन पद्धतियां और प्रदर्शन

उसके उपयोग पर स्थानीय किसाना का प्रशिक्षण/प्रदर्शन दिया जा रहा है और वर्मीकम्पोस्ट के नमूनों को बिना मूल्य के दिया जा रहा है।

वी वी के तथा डी वी का आंतरिक अनुश्रवण एवं मूल्यांकन

वी वी के का मूल्यांकन

डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने वी वी के, चंडीगढ़ के कार्य का मूल्यांकन 21 से 23 दिसम्बर 2010, वी वी के, पिंजौर के कार्य का मूल्यांकन 22 दिसम्बर 2010 तथा वी वी के, दादर और नागर हवेली का मूल्यांकन 27 जनवरी 2011 को किया।

श्री आर. पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं प्रकाशन), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 13 जनवरी 2011 को वी वी के, दिल्ली की प्रगति का मूल्यांकन किया। उन्होंने 10 जनवरी 2011 को वी वी के, असम की प्रगति का मूल्यांकन भी किया।

श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 13 और 14 दिसम्बर 2010 को वी वी के, हिमाचल प्रदेश की मूल्यांकन प्रगति के संबंध में दौरा किया।

श्री संदीप त्रिपाठी, निदेशक (परियोजना एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 6 मार्च 2011 को वी वी के, जबलपुर की प्रगति का मूल्यांकन किया।

डॉ. धर्मन्द वर्मा, सहायक महानिदेशक (पर्यावरण प्रबंधन), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 21 और 22 फरवरी 2011 को वी वी के, कर्नाटक की प्रगति का मूल्यांकन किया।

श्री एस. डी. शर्मा, सहायक महानिदेशक (सांख्यिकी), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 21 और 22 दिसम्बर 2010 को वी वी के, तमिलनाडु की प्रगति का मूल्यांकन किया।

श्री पंकज अग्रवाल, सहायक महानिदेशक (परियोजना संविन्यास), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 29 नवम्बर से 2 दिसम्बर 2010 तक वी वी के, राजस्थान के कार्य का मूल्यांकन किया।

डी वी का मूल्यांकन

श्री एम.एस. गब्याल, उप महानिदेशक (पशासन), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 20 दिसम्बर 2010 को डी वी, श्यामपुर का दौरा किया और प्रगति का मूल्यांकन किया।

श्री ओमकार सिंह, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 15 दिसम्बर 2010 को डी वी, लानाबाका का मूल्यांकन किया।

डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 8 दिसम्बर 2010 को डी वी, हप्पामुनी की कार्य प्रगति का मूल्यांकन किया।

श्री संदीप त्रिपाठी, निदेशक (परियोजना एवं अंतर्राष्ट्रीय सहयोग), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 6 मार्च 2011 को डी वी, मोइयानाला की कार्य प्रगति का मूल्यांकन किया।

डॉ. रवीन्द्र कुमार, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून प्रदर्शन ग्राम, हप्पामुनी में

डॉ. धर्मन्द वर्मा, सहायक महानिदेशक (पर्यावरण प्रबंधन), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 21 और 22 फरवरी 2011 को डी वी, डोड्डाकेरनहल्ली का दौरा किया और कार्य प्रगति का मूल्यांकन किया।

श्री एस. डी. शर्मा, सहायक महानिदेशक (सांख्यिकी), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 21 दिसम्बर 2010 को डी वी, कांडीयूर का दौरा किया और कार्य प्रगति का मूल्यांकन किया।

श्री पंकज अग्रवाल, सहायक महानिदेशक (परियोजना संविन्यास), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 29 नवम्बर स 2 दिसम्बर 2010 तक डी वी, सालावास में संस्थान द्वारा की गई प्रगति का मूल्यांकन किया।

श्री पंकज अग्रवाल, सहायक महानिदेशक (परियोजना सविन्यास), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून प्रदर्शन ग्राम, सालावास म

श्री आर. पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं प्रकाशन), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 11 और 12 जनवरी 2011 को डी वी, मेलांगग्रान्ट के कार्य का मूल्यांकन किया।

उपरोक्त सभी मूल्यांकन रिपोर्टों को सलाह/अवलोकनों सहित संबंधित संस्थानों के निदेशकों को भेज दिया गया है।

4.2 प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

वन प्रशिक्षण संस्थान, कानपुर के प्रशिक्षणार्थियों ने 29 अक्टूबर 2010 को सा.वा.पा.पु.के., इलाहाबाद का दौरा किया। प्रशिक्षणार्थियों को बांस प्रसार तकनीकों के बारे में प्रशिक्षित किया गया और प्रशिक्षकों को अनुसन्धान पौधशाला में तकनीकों का प्रदर्शन कराया गया।

इलाहाबाद के सैदूपुर गांव के किसानों के समक्ष 31 जनवरी 2011 को वर्मी कम्पोस्ट को तैयार करने का प्रदर्शन किया गया।

वन विज्ञान केंद्र प्रशिक्षण के भागीदारों के समक्ष वी वी के प्रशिक्षण के तहत 25 जनवरी 2011 को पौधशाला में बांस विस्तार तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

बांस प्रजाति की वानस्पतिक तकनीकें जैसे राइयजोम आफसेट रोपण, राइयजोम के निम्न भाग के साथ सिंगल कल्म, जुवनाईल सिंगल नोडल कटिंग, पूर्ण कल्म कटिंग, विनोडन कल्म कटिंग, सिंगल नोडल कल्म कटिंग, शाखा कर्तन (वर्टीकल तथा होरीजेंटल), एयर लेयरिंग, वृहत विस्तारण, ऊतक व्यवहार।

रिशेपिंग द गम्स की जानकारी विकसित की गई जिसे रसायन प्रभाग, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा मैसर्स आर एस खाद्य प्रक्रमण (1) प्राइवेट लिमिटेड, राजनंदगांव, छत्तीसगढ़ के समक्ष 12 अगस्त 2010 को ¡ 1,15,264/– की लागत में प्रदर्शित किया गया।

रिशेपिंग द गम्स का विकास किया गया और रसायन प्रभाग, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा 15 दिसम्बर 2010 को ¡ 1,25,000/– की लगत में मैसर्स राजपूत इंटरप्राइजेज प्राइवेट लिमिटेड, भोपाल के समक्ष प्रदर्शित किया गया।

आद्यागिक स्तर पर ब्लाक बाडस म जड आइ बी आ सी का अनुप्रयोग शुरू किया गया है।

माननीय केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार, 6 सितम्बर 2010 को चण्डीगढ़ में राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण एम.ओ.ई.एफ. तथा राज्य जैव विविधता बोर्डों के अखिल भारतीय सम्मेलन के दौरान

श्री पी.सी. नायर, आई ए एस, वित्तीय कमिश्नर तथा प्रधान सचिव वन एवं वन्यजीव, पंजाब, श्री बी सी बाला, आई एफ एस, पी सी सी एफ, पंजाब, श्री जीतेंद्र शर्मा, आई एफ एस, सी सी एफ (हिल्स) एस एफ डी पंजाब के कार्मिकों के समक्ष जल कुम्भी से कम्पोस्ट बनाने का प्रदर्शन, 16 फरवरी 2010, चंडीगढ़ में किया गया

पर्यावरणविद् बाबा बलवीर सिंह सीहवाल के अनुयार्थियों के समक्ष 15 फरवरी 2011 को सुल्तानपुर लोडी (पंजाब) में जल कुम्भी से कम्पोस्ट बनाने का प्रदर्शन

व.अ.सं., देहरादून में 23 से 27 मई 2011 तक सुरभित तेल, इत्रसाजी तथा आरोमाथेरेपी पर प्रशिक्षण–सह–कार्यशाला

एस एफ डी, पंजाब के कार्मिकों और एन जी ओ के समक्ष रंजक निष्कर्षण और रंजक तकनीक का प्रदर्शन

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान तथा व. आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में वृक्ष वृद्धि मेले के दौरान, किसानों और वानिकों को बीज प्रहस्तन तकनीकों का हस्तान्तरण किया गया।

तमिलनाडु मे *कैज्वारिना इक्विसिटीफोलिया* की रोपणियों के लिए क्षेत्रीय उत्पाद और कार्बन तालिका का विकास और प्रसार।

गुआनीडाइन रिकाल्सीट्रेन्ट ऊतकों से अहानिकर केमिकलों का उपयोग करते हुए अन्य फेनोलिक क्षमता का विकास किया गया। इस प्रकार कम लागत और उच्च प्रतिपूर्ति प्रोटोकॉल से कुछ आर एन ए का पृथक्करण किया गया। बायोटैक कन्सोर्टियम भारत, लिमिटेड, नई दिल्ली के सहयोग से इस तकनीक का व्यवसायीकरण करने का प्रयास किया जा रहा है। बी सी आई एल की तकनीकी आकलन रिपोर्ट से पता चला कि अनुसन्धान एवं विकास में इस तकनीक की भारी मांग है।

श्री वी के डब्ल्यू बाचपाई ने तमिलनाडु के आठ जिलों के 90 किसानों के लिए चार प्रशिक्षण आयोजित किए। *यूकेलिप्टस* तथा *कैज्वारिना* की क्लोनल तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

यूकेलिप्टस तथा *कैज्वारिना* की क्लोनल तकनीक पर "क्षमतावृद्धि" पर तमिलनाडु के किसानों को प्रशिक्षण

सुधारित बीजों की आपूर्ति

संस्थान ने विभिन्न दक्षिण भारतीय राज्यों से उच्च स्तर की रोपणियां उगाने के लिए *यूकेलिप्टस, कैज्वरिना* तथा *एकेसिया* के बीजोद्यानों से करीब 73 कि.ग्रा. सुधारित बीज एकत्र किए और उन्हें विभिन्न राज्यों जैसे तमिलनाडु, पांडेचेरी, आंध्र प्रदेश, उड़ीसा, उ.प्र., महाराष्ट्र और गुजरात के किसानों, वन विभागों और उद्योगों में वितरित किया। बीजोद्योनों से लिए गए बीजों की रोपणियों ने स्थानीय बीज स्रोतों की तुलना में असाधारण निष्पादन किया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

वानिकी में जैवउर्वरकों के रूप में आर्बूसकूलर माइकोरिजियल पर तकनीकी बुलेटिन तैयार किया गया (का.वि.प्रौ.सं. तकनीकी बुलेटिन नं. 5)।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

जबलपुर जिलों के चार गांवों यथाः पडारिया, खमारिया, नीमखेड़ा और सालीवाड़ा के किसानों को विकसित पैकेज देने के लिए *डी. सिस्सू–जिया माय* सिल्वी–एग्री पद्धति पर एक दिन का प्रशिक्षण/प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजन, 31 मार्च 2011 को उ.व.अ.सं., जबलपुर में किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट

पी आर ए तकनीकें तथा सूक्ष्म योजना बांस उपचार
वर्मीकम्पोस्ट
मधुमक्खी पालन
पैचोली एग्रोटेक्नीक्स
ट्राईकोडर्मा उत्पादन तथा कार्यक्षेत्रीय अनुप्रयोग
जैव कीटनाशक उत्पादन तथा कार्यक्षेत्रीय अनुप्रयोग
बीज प्रहस्तन–श्रेणीकरण तथा बोआई तकनीकें

फार्म में निम्नलिखित सहयोगात्मक अनुसन्धान भी किए गएः

1. पैचोली के वानस्पतिक प्रसारण के लिए कृषि तकनीकों के संदर्भ में नर्सरी स्थिति में कर्तनों की
2. पैचोली का कृषिवानिकी मॉडलों में विकास क. एरिकनट– पैचोली कृषिवानिकी मॉडल ख. आगर– पैचोली कृषिवानिकी मॉडल ग. मैंजियम– पैचोली कृषिवानिकी मॉडल
3. किंग चिली आधारित कृषिवानिकी मॉडलों का विकास
   क. एरिकनट– किंग चिली कृषिवानिकी मॉडल
   ख. मैंजियम– किंग चिली कृषिवानिकी मॉडल
4. अरहर का विकास– मस्कदाना कृषिवानिकी मॉडल
5. मैंजियम का विकास– चाय कृषिवानिकी मॉडल
6. नई तकनीकों की अनुकूलता और निरंतरता जांचने के लिए सहभागिता पद्धति का विकास

शु.व.अ.सं., जोधपुर

1. निम्नलिखित अरावली पहाड़ियों का पुनर्स्थापन

अधिकांश पर्वतीय क्षेत्रों जैसे अरावली में अति चराई, वानस्पतिक उन्मूलन तथा खनन् से प्राकृतिक वासस्थलों का निम्नीकरण एक आम घटना है। अरावली की पहाड़ियां, विश्व की सबसे पुरानी भौगोलिक संरचनाओं में से एक हैं। इसमें भारत की कई जनजातियां रहती हैं और यह क्षेत्र जीवविज्ञानीय अपघटन और भूमि निम्नीकरण अर्थात रेगिस्तानीकरण की जद में है। इन निम्नीकृत पहाड़ियों के पुनर्स्थापन के लिए वर्षाजल संचयन और विभिन्न वृक्ष प्रजातियों (*जिजीफस मारीटियाना, एकेसिया कटैच्यू, अजाडिरैक्टा इंडिका, एम्ब्लिका आफीसिनेलिस, डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस, मेलीना आर्बोरिया, होलोपटेलिया इन्टीग्रीफोलिया* तथा *साइजिजीयम कुमिनी*) के पुनर्वनीकरण का प्रयोग किया गया। आर डब्ल्यू एच संरचनाओं (कंटुअर ट्रेन्च [सी टी], ग्रेडोनी[जी डी], बॉक्स ट्रैंच [बी टी],वी–डिच्च [वी डी] तथा ए. कन्टाल) आर भ–खण्डा का ढालान घटक (<10%, 10-20% तथा >20%) उपचार के दो स्तर थे। आर डब्ल्यू एच के अनुप्रयोग से मृदा अभिलक्षणों में सुधार हुआ जैसे मृदा पी एच में कमी और ई सी, मृदा आर्गेनिक कार्बन, एन ओ, और पी ओ$_4$– पी,

<10%, ढालान और >20% ढालान। इससे पानी के कटाव, मृदा और पोषकों के ह्रास में कमी आई और रोपित पौधों में वृद्धि हुई और साथ ही हार्वेसियम लेयर उत्पादकता में 24 से 62% की वृद्धि हुई (औसतनः छः वर्षों में) और कार्बन स्टॉक में 3–8 गुना वृद्धि हुई। कंटुअर ट्रेंच तथा बाक्स ट्रेंच, पादप वृद्धि में लाभकारी सिद्ध हुई जबकि वी–डिच उपचार हर्वेसिस वृद्धि और उत्पादकता के लिए सर्वोत्तम थे। इस पद्धति के फलस्वरूप प्रजातियों की संख्या 2005 में 39 से बढ़कर 2009 में 92 हो गई।

जल उपलब्धता अवधि– नवम्बर से जनवरी/मार्च तक बढ़ गई और जलाऊ काष्ठ आपूर्ति और चारा उपलब्धता में आशातीत वृद्धि हुई, जिसके फलस्वरूप आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले जनजातीय लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में पर्याप्त सुधार हुआ। इस प्रकार आर डब्ल्यू एच तथा पुनर्वनीकरण से निम्नीकृत पहाड़ियों में सुधार होता है। ढालानों की स्थिति सुधरती है और पादपों तथा जड़ीय जैवमात्रा की वृद्धि होती है।

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

पहाड़ों की प्रारंभिक स्थिति (क और ख)। अक्टूबर 2010 में बांसवाड़ा में निम्नीकृत अरावली के पुनर्स्थापन के दौरान हर्वेसियस लेयर तथा पादप वृद्धि (ग और घ)

विस्तारः राज्य वन विभाग के कार्मिकों द्वारा प्रयोग को दोहराने, प्रौद्योगिकी को अपनाने और निम्नीकृत मानक लम्बाई और मोटाई।

अरावली पहाड़ियों में पुनर्स्थापन के लिए दौरे किए गए।

मृदा जल और पोषक तत्वों के मामले में

परिणामों को प्रकाशित किया गया और अंगीकरण के व्यापक प्रसार के लिए सेमीनारों, कार्यशालाओं तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रस्तुत किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला

किसानों, राज्य वन विभाग के कार्मिकों और अन्य दायित्वधारियों के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षण, मानकीकृत तकनीकों के अनुसार दिए गए।

4.3 अनुसन्धान प्रकाशन

भा.वा.अ.शि.प. के अनुसन्धानकर्ताओं ने विभिन्न जर्नलों में 323 अनुसंधान प्रलेखों को प्रकाशित किया है जिनमें 92 लेख विदेशी जर्नलों में छपे हैं। सम्मेलनों/सिम्पोजिया/सेमीनार आदि में 302 अनुसन्धान प्रलेख प्रस्तुत/प्रकाशित किए गए। ब्रोशर आदि भी प्रकाशित किए गए हैं।

जैवप्रौद्योगिकी सूचना के राष्ट्रीय केंद्र, यू एस ए ने निम्नलिखित फंगस जीन आइसोलेट्स को एक्सेसन नम्बर देने का काम लिया है:

क. *कार्डीसेप्स साइनेनसिस:* 40
ख. *गैनोडर्मा ल्यूसीडम:* 47
ग. *गेनोडर्मा रेसीनेसियम:* 2
घ. *गेनोडर्मा वेबीरिएनम:* 2

4.4 सेमीनार/सिम्पोजिया/कार्यशालाओं का आयोजन

सेमीनार

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा काष्ठ विज्ञानों और तकनीकी अनुसन्धानों में की गई प्रगति : वर्तमान प्रवृत्तियां, भविष्य की चुनौतियां और सुअवसर, पर वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 9 और 10 मार्च 2011 को राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न संस्थानों/विश्विद्यालयों के 150 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने उष्णकटिबंधीय पारिपद्धतिः संरचना, क्रियाकलापों और सेवाओं पर 28 और 29 दिसम्बर 2010 को राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प.सं, कोयम्बटूर ने 3 और 4 मार्च 2011 को कैज्यूरियाना पर दूसरी राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर ने बांस प्रसार, प्रबंधन और उपयोजन की वर्तमान प्रगति पर 17 और 18 फरवरी 2011 को राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया। सेमीनार का उद्घाटन, डॉ. पी.जे. दिलीप कुमार, महानिदेशक (वन) एवं विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा किया गया। डॉ. कामेश्वर ओझा, डी डी जी, राष्ट्रीय बांस मिशन, नई दिल्ली ने मुख्य व्याख्यान दिया। डॉ. अश्वथानारायण, एम एल ए मालेश्वरम, बंगलौर तथा श्री सी. एस. बेदांत, एम डी, के एस एफ डी, सम्माननीय अतिथि थे। श्री एस. सी. जोशी, निदेशक, आई डब्ल्यू एस टी, बंगलौर ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। डॉ. पंकज कुमार अग्रवाल, एस सी–ई, आई डब्ल्यू एस टी, बंगलौर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा प्रलेखों के सारांश की स्मारिका का विमोचन किया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में करीब 65 प्रलेखों को मौखिक तथा 18 प्रलेखों को पोस्टर्स के रूप में प्रस्तुत किया गया। 18 फरवरी 2011 को निष्कर्षात्मक सत्र का आयोजन किया गया और सेमीनार में की गई संस्तुतियों को अंतिम रूप दिया गया।

व.उ.सं., रांची ने औषधीय पादपों के सतत् उपयोजन की चुनौतियां और समस्याओं पर क्षेत्रीय सेमीनार का आयोजन किया।

कार्यशालाएं

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने डी एस टी प्रशिक्षण कार्यक्रम को अंतिम रूप देने के लिए दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इसे भा.वा.अ.शि.प., देहरादून के जैवविविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग ने 28 और 29 जनवरी 2011 को आयोजित किया। इसमें विभिन्न संस्थानों के 32 भागीदार उपस्थित थे।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने ''भू–दृश्य पुनर्स्थापन प्रक्रिया – चुनौतियां और सुअवसर'' पर 22 और 23 फरवरी 2011 को राष्ट्रीय कार्यशाला का अयोजन किया।

वन अनुसन्धान सस्थान, दहरादन न उत्तराखण्ड राज्य के विद्यार्थियों, शिक्षकों और अनुसन्धान स्कालर्स के लिए 26 सितम्बर 2010 से 8 अक्टूबर 2010 तक समर स्कूल का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने व.अ.व्र.प्र.सं., कोयम्बटूर में वन आनुवंशिकी संसाधन प्रबंधन नेटवर्क की रणनीतियों पर 9 और 10 मार्च 2011 को

दो दिवसीय कार्यशाला का अयोजन किया जिसमें कुल 118 भागीदार शामिल हुए जिनमें विभिन्न राज्यों के वरिष्ठ वन अधिकारी, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर्स, विभिन्न अनुसन्धान संस्थानों के वैज्ञानिक तथा उद्योगों के कार्मिक शामिल थे।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने वन अनुसन्धान और विस्तार पर तिरूवंथपुरम में 19 मई 2010 को दायित्वधारियों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने उष्णकटिबंधीय पारिपद्धतिः संरचना, क्रियाकलापों और सेवाओं पर 28 और 29 दिसम्बर 2010 को राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने ''वन अनुसन्धान एवं विस्तार'' पर दायित्वधारियों की बैठक का आयोजन किया जिसमें तमिलनाडु वन विभाग के कार्मिक शामिल थे। कार्यशाला का आयोजन पानागल मालीगाई, वन मुख्यालय, तमिलनाडु में 28 अप्रैल 2010 को किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने वन अनुसंधान एवं विस्तार पर वन मुख्यालय, तिरूवंथपुरम में 19 मई 2010 को केरल वन विभाग के साथ कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने ''वन अनुसंधान एवं विस्तार'' पर, पर्यावरण एवं वन विभाग, अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह में 31 मई 2010 को दायित्वधारियों की कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने रोपण तकनीकों पर 5 जून 2010 को किसानों के साथ अंतःसक्रिय कार्यशाला का आयोजन किया।

''अखिल भारतीय मल्टीलोकेश्नल ट्रायल्स–यूकेलिप्टस'' पर 29 और 30 जुलाई 2010 को कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने व्यवहारिक विज्ञान और संगठनात्मक व्यवहार की अवधारणाओं के संबंध में वर्तमान वैज्ञानिकों के संस्थानिक व्यवहार, पर कार्यशाला का आयोजन 20 अगस्त 2010 को किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने आनुवंशीय रूप से सुधारित स्टॉक के उत्पादन, पर 13 अगस्त 2010 को क्षमतावृद्धि कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने ''वन आनुवंशीय संसाधनों के प्रबंधन'' पर भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए 18 और 19 अक्टूबर 2010 को प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने ''क्यू टी एल की पद्धतिया और सबद्ध मानचित्रीकरण'' पर 23 दिसम्बर 2010 को कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने ''पपया मेले बग (पैराकोकक्स मारजीनेटस) द्वारा वृक्ष फसलों के नुकसान'' पर किसानों और वानिकों के लिए 30 दिसम्बर 2010 को कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने ''वृक्ष फसलों की खेती और प्रबंधन'' पर केरल के किसानों के लिए केरल वन विभाग के सहयोग से 31 जनवरी 2011 को कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने ''वृक्ष फार्मिंग की सर्वोत्तम पद्धतियों'' पर तमिलनाडु के किसानों के लिए तमिलनाडु वन विभाग के सहयोग से 24 और 25 फरवरी 2011 को कार्यशाला का आयोजन किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने ''निरंतर उत्पादकता के लिए संदूषित मृदाओं के जैवकीय सुधार'' पर तमिलनाडु वन विभाग के साथ 25 मार्च 2011 को कार्यशाला का आयोजन किया।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर ने ''काष्ठ शिल्प : भविष्य की रणनीतियां'' पर 9 जुलाई 2010 को कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला का उद्घाटन मि. ल्यूकोज वालाथराई, मैनेजिंग डायरेक्टर, के एस एच डी सी द्वारा किया गया। मि. ए.के.वर्मा, एम डी, के एस एफ आई सी, मि. सी. एस वेदांत, एम डी, के एस एफ डी सी, मि. एस सी जोशी, निदेशक, आई डब्ल्यू एस टी, अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। डॉ. पंकज कुमार अग्रवाल, वैज्ञानिक–ई, नोडल आफिसर थे।

उ.व.अ.स. जबलपुर न ''अनुसन्धान आवश्यकताएं तथा वित्तीय तकनीकें एवं क्षमता आवश्यकताएं तथा जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न बाधाएं और साथ ही, भारत में वन उत्पाद'' पर 1 सितम्बर 2010 को कार्यशाला का आयोजन किया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर ने ''संरक्षण एवं औषधीय पादपों और अन्य एन टी एफ पी एस की सतत्

उपज पद्धतियों'' पर कार्यशाला/विचार–विमर्श का आयोजन किया। यह आयोजन वन रक्षण समिति के सदस्यों और भण्डाकोने गांव के इच्छुक व्यक्तियों, उमरगोहान तथा डामगढ़, अमरकंटक रेंज के लिए था जहां इसका आयोजन 6 जनवरी 2011 को किया गया। पूर्वी कारान्जिया वन प्रभाग (एम पी) में यह आयोजन 7 जनवरी 2011 को किया गया।

व.उ.अ.सं., जबलपुर ने ''गैर प्रकाष्ठीय वन उत्पादों का विपणनः समस्याएं और चुनौतियां'' पर 19 फरवरी 2011 को कार्यशाला का आयोजन किया।

शु.व.अ.सं., जाधपर न ''जलवायु परिवर्तन– चिंताएं, आवश्यकताएं, सुअवसर तथा कमिया'' पर 14 जून 2010 को अंतःसक्रिय कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें अनुसन्धान आवश्यकताओं और जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने के साथ–साथ भारत के शुष्क क्षेत्रों में वन उत्पादों के लिए वित्तीय तकनीकी क्षमताओं और समस्याओं के निदान पर विचार किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने ''हरित भारत संबंधी अनुसन्धान और उसके भविष्य पर विचार करने, अवसरों और चुनौतियों को अनुसन्धान से जोड़ते हुए उद्देश्य प्राप्त करने हेतु 2 जुलाई 2010 को अंतःसक्रिय कार्यशाला का आयोजन किया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर ने ''खेजरी मृत्यता'' पर 21 से 23 अगस्त 2010 को तीन दिवसीय कार्यशाला/बैठक का आयोजन किया जिसमें भा.वा. अ.शि.प., आई सी ए आर के विभिन्न संस्थानों, एन जी ओ तथा उन्नतशील किसानों ने भाग लिया।

श.व.अ.स, जाधपर न सामाजिक आवश्यकतापूर्ति के लिए 18 और 19 नवम्बर 2010 को तकनीकी विचार–विमर्श हेतु डी एस टी–वर्म मॉनीटरिंग कार्यशाला का आयोजन किया।

हि.व.अ.सं., शिमला द्वारा 1 जुलाई 2010 को वन भवन जम्मू और कश्मीर में दायित्वधारियों की परामर्शी बैठक का आयोजन किया गया जिसका विषय था– ''वानिकी अनुसन्धान आवश्यकता का आकलन : राज्य में अनुसन्धान प्राथमिकताओं की पहचान''। बैठक की अध्यक्षता श्री जगदीश केशवान, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक, जे एवं के द्वारा की गई। क्षेत्र में परामर्शी प्रक्रिया को अधिक व्यापक बनाने के लिए क्षेत्र के विभिन्न दायित्वधारियों, विभिन्न विशेषज्ञ वर्गों, एन जी ओ, उन्नतिशील किसानों और स्थानीय समुदाय आधारित संगठनों, जैसे महिला मण्डल, युवा मण्डल आदि को भी आमंत्रित किया गया था।

हि.व.अ.सं., शिमला ने 6 अगस्त 2010 को, वानिकी अनुसन्धान आकलन, पर दायित्वधारियों की परामर्शी बैठक का आयोजन किया। बैठक में हिमाचल प्रदेश के संस्थानीकरण की प्रक्रिया पर विचार किया गया। बैठक की अध्यक्षता श्री विनय टण्डन, भा.व.से प्रधान मुख्य वन संरक्षण, हि.प्र. ने की। लगभग 50 भागीदार शामिल हुए, जिनमें राज्य वन विभागों के वरिष्ठ वन अधिकारी, राज्य के अन्य दायित्वधारी, संस्थानों के अधिकारी, वैज्ञानिक तथा अनुसन्धान स्टॉफ शामिल थे।

हि.व.अ.सं., शिमला ने हिमाचल प्रदेश के औषधीय पादपों के संरक्षण, आकलन, प्रबंधन तथा प्राथमिकता पर रणनीति बनाने हेतु 1 से 4 दिसम्बर 2010 तक कार्यशाला का आयोजन किया।

हि.व.अ.स., शिमला न अनुसन्धान आवश्यकताओं की स्थिति, नीतिगत संरचना और पश्चिमी हिमालय के संदर्भ में जलागम से संबंधित विषयों के लिए ''जलागमों जल संभरण क्षमता : समस्याएं और चुनौतियां'' पर 23 मार्च 2011 को विचारोत्तेजक अंतःसक्रिय कार्यशाला का आयोजन किया। कार्यशाला में अंतर्राष्ट्रीय वानिकी वर्ष भी मनाया गया। हिमाचल प्रदेश वन विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार के संबंधित विभाग, यू एच एफ, नौनी, सोलन से सहयोगी संगठनों, गैर सरकार संगठनों के प्रतिनिधि, जिनमें उन्नतिशील किसान शामिल थे, सहित 60 भागीदारों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। इस लम्बे

विचार–विमर्श में संस्थानों के अधिकारियों, वैज्ञानिकों और अन्य अनुसन्धान सहायक स्टॉफ ने भी भाग लिया।

आई एफ पी, रांची ने खनन् क्षेत्रों में जैवविविध और सामाजिक सुरक्षा पर बालीपाड़ा ट्रैक्ट तथा फ्रंटियर फाउन्डेशन, असम के सहयोग से 7 अक्टूबर 2010 को राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया।

सम्मेलन

व.उ.स., रांची ने ''औषधीय पादपों और अकाष्ठीय वन उत्पादों का संरक्षण, सुधार और सतत् उपयोजन'', पर 8 और 9 मार्च 2011 को राष्ट्रीय सम्मेलन का अयोजन किया।

4.5 परामर्शी

पर्यावरण पबधन, विस्तार निदशालय, भा.वा.अ.शि.प. के तहत जलविद्युत, खनन, संरचना, हाईवे आदि पर पर्यावरण और वनों के संबंध में परामर्श लिया जाता है। यह प्रभाग क्षेत्र आधारित परामर्श के लिए भा.वा.अ.शि.प. क सस्थाना म इ आइ ए सल्स स भी समन्वय करता है। मार्च 2011 तक प्रभाग ने ¡ 1193.02 लाख के
30 ई आई ए/ई एम पी अध्ययन पूरे कर लिए थे और
¡ 295.80 लाख की 10 परियोजनाओं पर काम चल रहा है।

भा.वा.अ.शि.प., पर्यावरण एवं वानिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण संस्थान है। परिषद् द्वारा ग्राहकों को प्राकृतिक स्रोतों के विभिन्न क्षेत्रों में सहायता दी जाती है, जैसे जलविद्युत, खनन क्षेत्र, हाइ–वे तेल की खोज, वृहत संरचना, वन प्रबंधन, भू–दृश्य और पुनर्स्थापन। परिषद्
द्वारा इन विषयों पर पर्यावरणीय प्रबंधन उपाय सुझाए जाते हैं।

वर्ष 2010–11 के दौरान निम्नलिखित परामर्श पूरे किए गए हैं:

क. पूर्ण किए गए परामर्श

कुठेर जल विद्युत परियोजना – 260एम डब्ल्यू उत्पादन पर अध्ययन, रावी नदी पर प्रस्तावित योजना, जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश में जे एस डब्ल्यू इनर्जी लिमिटेड, मुम्बई।

ग्रेटर नोएडा से बलिया तक प्रस्तावित गंगा एक्सप्रैस हाइवे के बारे में विभिन्न पारिपद्धतियों के तहत जैवविविधता आकलन किए गए। मसस ज पी वन्चुअस, पाइवट लिमिटड, नाएडा, उत्तर प्रदेश को विस्तृत रिपोर्ट दे दी गई है।

कृषि फसलों और जल संरचनाओं के साथ जोती गई कृषि भूमि

उत्तर प्रदेश में कृषि खेतों में नीलगाय (मादाएँ)

प्रस्तावित उन्नाव भूमि पार्सल, अंचाहर भूमि पार्सल और पटियाली भूमि पार्सल परियोजना में तरभूमि जैवविविधता आकलन पर मेसर्स जे पी वेन्चुअर्स, प्राइवेट लिमिटेड, उत्तर प्रदेश को विस्तृत रिपोर्ट भेज दी गई है।

कनेरा लिफ्ट सिंचाई स्कीम, जिला भिन्ड, मध्य प्रदेश में चम्बल अभ्यारण कछार का जैवविविधता आकलन, पर जल संसाधन विभाग, ग्वालियर, मध्य प्रदेश को रिपोर्ट भेज दी गई है।

ख. दिए गए परामर्श

1. टिहरी हाइड्रो विकास कारपोरेशन, इंडिया लिमिटेड द्वारा भूटान में भुनाखा चुंखा जिला, डंजोखांग, भूटान में जलविद्युत परियोजना पर व्यापक ई आई ए तथा ई एम पी रिपोर्ट दे दी गई है।

भूटान के अध्ययन क्षेत्र में बस्ती का दृश्य

2. हिमाचल प्रदेश में हि.प्र. पावर कारपोरेशन लिमिटेड द्वारा जिफा (300 मे.वा.) नखतान (141 मे.वा.), बेरी निचली (78 मे.वा.), थाना पलाऊ (141 म.वा.) तथा सरगानी सडला (42 मे.वा.) के लिए ई एम पी सूत्रवृद्धिकरण हेतु व्यापक ई आई ए अध्ययन।

जिस्पा परियोजना स्थल, हिमाचल प्रदेश

थाना पलाऊं परियोजना, हिमाचल प्रदेश

3. हिमाचल प्रदेश में जे एफ डब्ल्यू इनर्जी लिमिटेड द्वारा कुटेहर जल विद्युत परियोजना के लिए कैचमेंट एरिया उपचार योजना।

इस अवधि के दौरान भा.वा.अ.शि.प. की टीम ने पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा आयोजित एक्सपर्ट एप्राइसल समिति की बैठकों में भी भाग लिया:

1. कुठेर जल विद्युत परियोजना (260 मे.वा.), जिला सम्बा, हिमाचल प्रदेश के लिए ई आई ए तथा ई एम पी, जे एस डब्ल्यू इनर्जी लिमिटेड, मुम्बई।
2. अकवा लाह अयस्क डिपाजिट झारखण्ड म इ आइ ए तथा ई एम पी के साथ कैचमेंट एरिया उपचार योजना में जल–विज्ञान और जल निकासी अध्ययन। जे एस डब्ल्यू स्टील लिमिटेड, मुम्बई।

अप्रैल 2010 से मार्च 2011 के बीच प्रभाग द्वारा निम्नलिखित परियोजनाओं को सफलतापूर्वक पूरा किया गया:

1. कैचमेंट एरिया उपचार योजना के साथ ई आई ए तथा ई एम पी की तैयारी। झारखण्ड में अंकुआ लोह–अयस्क डिपाजिट पर जल विज्ञान एवं जल विकास अध्ययन। जे एस डब्ल्यू स्टील लिमिटेड, मुम्बई।
2. ई आई ए, ई एम पी, एस आई ए, सामाजिक–आर्थिक आधारित सर्वेक्षण तथा आर एवं आर योजना– टाई डांग–II 60 (मे.वा.) किन्नौर जिले में एच ई पी परियोजना, हि.प्र., हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड।
3. ग्रेटर नोएडा से बलिया परियोजना के लिए गंगा एक्सप्रैस–वे हेतु जैवविविधता आकलन रिपोर्ट। मैसर्स जे पी वेन्चुअर्स, प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा।
4. उन्नाव लैण्ड पार्सल, ऊंचाहार लैण्ड पार्सल तथा पटियाली लैण्ड पार्सल परियोजना की तर भूमि अध्ययन पर जैवविविधता आकलन अध्ययन रिपोर्ट। मैसर्स जे पी वेन्चुअर्स प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा।
5. कनेरा लिफ्ट इरीगेशन स्कीम, जिला भिण्ड, मध्य प्रदेश के लिए जैवविविधता समाघात आकलन। जल संसाधन विभाग, ग्वालियर (म.प्र.)।

भूटान रॉयल गवर्मेन्ट को पूर्व में दी गई परामर्शी सेवाओं की गुणवत्ता को देखते हुए टिहरी जल विकास कारपोरेशन, भारत ने व्यापक पर्यावरणीय समाघात आकलन के लिए ` 75.80 लाख की एक और जल विद्युत परियोजना दी गई।

के लिए ई आई ए का व्यापक अध्ययन करने हेतु हिमाचल प्रदेश पावर कारपोरेशन लिमिटेड के साथ एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए हैं:

1. जिस्पा जलविद्युत परियोजना (300 मे.वा.), हि.प्र. के लिए व्यापक ई आई ए अध्ययन।
2. तोश पार्वती (400 मे.वा.) एच ई पी परियोजना हि.प्र. के लिए पर्यावरणीय समाघात आकलन तथा पर्यावरणीय प्रबंधन योजना।
3. बेरी निचली जल विद्युत परियोजना (78 मे.वा.), हि. प्र. के लिए व्यापक ई आई ए अध्ययन।
4. थाना प्लाउन जलविद्युत परियाजना (141 मे.वा.), हि. प्र. के लिए व्यापक ई आई ए अध्ययन।
5. सुरगानी सुंडला (42 मे.वा.) एच ई पी परियोजना के लिए पर्यावरणीय समाघात आकलन तथा पर्यावरणीय प्रबंधन योजना।

इसके अलावा, जे एस डब्ल्यू इनर्जी लिमिटेड ने कुटेहर एच ई पी, हि. प्र. के लिए कैचमेंट एरिया उपचार योजना बनाने को कहा है।

वर्ष के दौरान, ई एम प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प. ने निम्नलिखित परियाजनाआ क लिए इ आइ ए अध्ययन किए तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय से पर्यावरणीय अनापत्ति देने हेतु ई एम पी को सूत्रबद्ध करने संबंधी कार्य किया:

1. कुठेर जल विद्युत परियोजना (260 मे.वा.) जिला चम्बा, हि.प्र. के लिए ई आई तथा ई एम पी। जे एस डब्ल्यू इनर्जी लिमिटेड, मुम्बई।
2. झारखण्ड में अंकुआ के लिए लोहा अयस्क डिपाजिट हेतु जलग्रहण क्षेत्र उपचार योजना, जलविज्ञान तथा निकासी पर इ आइ ए तथा इ एम पी अध्ययन। जे एस डब्ल्यू स्टील लिमिटेड, मुम्बई।

इस अवधि क दारान, भा.वा.अ.शि.प. की इ आइ ए टीम न निम्नलिखित परियाजनाआ क सबध म पयावरण एववन मंत्रालय द्वारा आयोजित बैठकों में भी भाग लिया:

3. कुठेर जल विद्युत परियोजना (260 मे.वा.) जिला चम्बा, हि.प्र. के लिए ई आई तथा ई एम पी। जे एस डब्ल्यू इनर्जी लिमिटेड, मुम्बई।
4. झारखण्ड में अंकुआ के लिए लोहा अयस्क डिपाजिट हेतु जलग्रहण क्षेत्र उपचार योजना, अध्ययन। जे एस डब्ल्यू स्टील लिमिटेड, मुम्बई।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

नागार्जुन फर्टीलाईजर्स एवं केमिकल्स लिमिटेड, नागार्जुन पहाड़ियों, हैदराबाद से जैवमात्रा फीड स्टॉक के अभिलक्षणों पर विश्लेषण किए।

भाप से गरम होने वाले दस भट्टों (kilns) को आधुनिक बनाकर, उ.प्र. एक्सपोर्ट कारपोरेशन, लिमिटेड, सहारनपुर में पुनः स्थापित किया जिसके लिए पिछले वर्ष काष्ठ संशोषण के वैज्ञानिकों ने तकनीकी सुपरविजन किया। वर्ष के दौरान परामर्शी सेवाएं दी गई। कारपोरेशन द्वारा इन भट्टों (kilns) का उपयोग वाणिज्यिक दृष्टि से प्रकाष्ठ संशोषण हेतु किया जा रहा है।

डॉ. विमल कोठियाल, प्रधान, वन उत्पाद प्रभाग ने मैसर्स इंडिया पर्यटन विकास कारपोरेशन लिमिटेड का परामशी सहायता दी और राजस्व अजित किया।

अक्टूबर 2010 से जुलाई 2011 (दस महीने) तक निर्मल बीज प्राइवेट लिमिटेड, पचौरा–जलगांव, महाराष्ट्र, भारत को ''जैवकीटनाशक फोटोरहबडस लिमिन्सीन्स अखुरस्ती स्ट्रेन के1–52% वी/ वी ई सी'' पर परामर्शी सेवाएं दी।

कम्बोडिया में टा प्रोहम मंदिर के वृक्ष संरक्षण के लिए भारतीय पुरात्तव विज्ञान सर्वेक्षण।

बोध वृक्ष के अनुरक्षण के लिए बोधगया मंदिर प्रबंधन समिति।

हिमाचल प्रदेश जल विद्युत परियोजना लिमिटेड द्वारा वित्त पोषित रेणुका बांध के लिए परामर्शी कार्य किया।

डी ई एफ आर ए परियोजना पर परामर्शी कार्य किया।

एन सी टी दिल्ली के लिए बर्तनों में उगाए जाने वाले पादपों के विकास के लिए परामर्शी कार्य।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

बुनाखा जल विद्युत परियोजना, भूटान के लिए टिहरी जल विद्युत विकास कारपोरेशन लिमिटेड द्वारा दिया गया। पर्यावरण समाघात आकलन/पर्यावरण प्रबंधन योजना पर कार्य किया।

निम्नलिखित बहुउद्देशीय ` 205.01 लाख की परियोजनाओं परियोजना भूटान के लिए टिहरी जल विद्युत विकास कारपोरेशन लिमिटेड द्वारा दिया गया। व्यापक पर्यावरणीय समाघात आकलन/पर्यावरणीय प्रबंधन योजना तैयार की गई।

मैसूर पेपर मिल, भद्रावती, कर्नाटक के लिए ''डी एन ए प्रोफाईलिंग आफ *यूकेलिप्टस* एण्ड *एकेसिया* हाईब्रिड'' पर परामर्शी परियोजना पूरी की गई।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

भा.वा.अ.शि.प. सहायता अनुदान से वानिकी विद्यालय, पोन्नेम्पेट, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ में किए जा रहे कार्य को मॉनीटर और मूल्यांकित किया गया।

भा.वा.अ.शि.प. अनुदान से वानिकी विद्यालय, सिरसी, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलौर के किए जा रहे कार्य को मॉनीटर और मूल्यांकित किया गया।

विभिन्न (सरकार/गैर सरकारी/पी एस यू/निजी आदि) संगठनों को काष्ठ पहचान, नमी मात्रा निर्धारण, घनत्व और सामर्थ्य गुणों की पहचान में सहायता दी गई।

भूटान सरकार द्वारा लिए गए भुनाखा जल विद्युत परियोजना (180 मे.वा.) को ई आई ए तथा ई एम पी परामर्श दिए गए।

भूटान सरकार द्वारा लिए गए संकोश जल विद्युत परियोजना (4060 मे.वा.) तथा संकोश बहुउद्देशीय परियोजना को ई आई ए/ई एम पी परामर्श दिए गए।

जे एस डब्ल्यू लिमिटेड, झारखण्ड की अंकुआ लोहा अयस्क खान, को ई आई ए/ई एम पी सेवाएं दी गई।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

1. सीमेंट प्लांट और चूना पत्थर खनन क्षेत्र मैहर के पास (जिला–सतना, म.प्र.) के नामिक और बाह्य क्षेत्र में जीवजंतु तथा वनस्पतियों का सर्वेक्षण तथा प्रलेखीकरण किया।
2. एन सी पी पी–दादरी परियोजना के लिए हरित आच्छादन और उसके दृश्य और अदृश्य लाभ तथा वृक्ष आच्छादन योजना का आकलन।
3. जैविक विज्ञान तथा सिकारी, म.प्र. में सीमेंट तथा चूना पत्थर खानों के मध्य तथा बाह्य भागों में जीवजंतु और वनस्पति का सर्वेक्षण तथा प्रलेखीकरण, पर अध्ययन करके रिलायंस सीमेंट प्राइवेट लिमिटेड, मुम्बई को अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत की।
4. एस टी पी पी– कोरबा परियोजना के लिए हरित आच्छादन के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभें का आकलन करते हुए वृक्षाच्छादन प्रबंधन पर रिपोर्ट प्रस्तुत की।
5. कनेरा लिफ्ट सिंचाई योजना, जिला भिण्ड, मध्य प्रदेश के लिए परामर्शी का कार्य किया और भा.वा.अ.शि.प., देहरादून को अपने पत्र स. Ento-3/TFRI/JBP/2010/1161 दिनाक 29 जन 2010 के तहत जीव जंतुओं पर जैवविविधता समाघात आकलन पर अध्ययन प्रस्तुत किया।
6. अचनकमार–अमरकंटक अभ्यारण, बिलासपुर (मार्च 2011 में) के विकास के कार्य का अनुश्रवण एवं मूल्यांकन।

व.व.अ.सं., जोरहाट

बी आर टी एफ– रोड–ट्रांसपोर्ट एवं राजमार्ग, भारत सरकार द्वारा व.व.अ.सं., जोरहाट को रणनीतिक सड़क फलैगाहिल–डोकाला, पांगोलखा, वन्यजीव अभ्यारण, सिक्किम राज्य के लिए जैवविविधता समाघात आकलन अध्ययन पर परामर्शी परियोजना का कार्य दिया गया है।

हि.व.अ.सं., शिमला

हाल ही में, संस्थान को राज्य वन विभाग, जम्मू और कश्मीर द्वारा जम्मू के पांच जिलों में ` 57.50 लाख की लागत पर, गैर वनीय भूमियों पर खैर के वृक्ष का आकलन करने का परामर्शी कार्य दिया गया है जिसके एम ओ यू पर मई 2010 के दूसरे सप्ताह हस्ताक्षर किए जाएंगे।

संस्थान को हाल ही में छुवारी डलहोजी वन प्रभाग, जिला कांगड़ा में ` 15.00 लाख की (परामर्शी आधार पर) सी ए टी योजना तैयार करने को दी गई है।

हिमालयी वन अनुसन्धान संस्थान ने एक परामर्शी कार्य पूरा किया है जिसका शीर्षक है, पर्यावरण

काशंग जल विद्युत परियोजना (243 मे.वा.) जिला किन्नौर, हिमाचल प्रदेश पर पर्यावरणीय प्रबंधन योजना तैयार करना। यह कार्य, मेसर्स हिमाचल प्रदेश पावर कार्पोरेशन लिमिटेड, शिमला द्वारा ` 30.00 लाख में दिया गया है। ई आई ए अध्ययन प्रारंभ करने के बाद,

एक व्यापक ई एम पी तैयार किया गया, जिसमें जनता की सुनवाई और जनता के साथ स्थानीय प्रशासन की परामर्शी बैठकों सहित सभी आवश्यक पहलुओं पर व्यापक विचार–विमर्श किया गया। ई एम पी में, स्थानीय प्रशासन तथा स्थानीय लोगों के सुझावों को ध्यान में रखा गया जिसके लिए ई आई ए और ई एम पी को हिमाचल प्रदेश सरकार द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति तथा हिमाचल प्रदेश राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्राधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। उपरोक्त दोनों प्राधिकारियों की सलाहों को योजना में शामिल किया गया। अतः 14 सितम्बर 2009 को, योजना को पर्यावरण

एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली की विशेषज्ञ

एप्राइसल समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया। ई ए सी ने कुठ मामले उठाए और मत्स्य जीवों पर अध्ययन करने को कहा। ई ए सी की सलाहों को योजना में जोड़ा गया और संशोधित योजना को ई ए सी के सामने दोबारा

15 दिसम्बर 2010 को रखा गया। अतः हि.व.अ.सं. द्वारा तैयार ई एम पी को ई ए सी ने अनुमोदित कर दिया और हि.व.अ. सं. द्वारा किए गए कार्य की सराहना की गई।

जलग्रहण क्षेत्र की तैयारी और फिना सिंह मिडियम सिंचाई परियोजना, नूरपुर जिला कांगड़ा, हि.प्र. की उपचार योजना शीर्षक से परामर्शी कार्य

` 15.00 लाख में किया गया और परामर्शी संगठन अर्थात अधिशासी अभियंता, आई पी एच प्रभाग, नूरपुर जिला कांगड़ा को प्रस्तुत किया गया।

निदेशक, हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला ने फिना सिंह सिंचाई परियोजना पर 4 सितम्बर 2010 को प्रस्तुति का आयोजन किया, जिसमें राज्य वन विभाग और सिंचाई तथा जन स्वास्थ्य विभाग, हि.प्र. के अधिकारी उपस्थित थे। हि.वा.अ.सं., शिमला द्वारा इस कार्यान्वियत किया जा रहा है।

व.उ.सं., रांची

झारखण्ड में केंदू (*ब्रइओसपाइरस मिनालोसाइलन)* पत्ती उत्पादन पर परियोजना के लिए संदर्भ शर्तों पर

झारखण्ड राज्य वन विभाग कारपोरेशन लिमिटेड, रांची (निधिकरण निकाय) और वन उत्पादकता संस्थान, रांची (कार्यान्वयन निकाय) के बीच 19 जनवरी 2010 को हस्ताक्षर किए गए। (बजट ¡ 29.00 लाख : परियोजना अवधि छः महीने)

कारो और टेट्रियाखार ओ सी पी के विशिष्ट जीव जंतुओं के लिए संरक्षण योजना का कार्य सी सी एल राची द्वारा दिया गया था जिस पण कर लिया गया था।

4.6 तकनीकी सेवाएं

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

भारतीय लुग्दी एवं कागज उद्योगों को विभिन्न तकनीकी सेवाएं दी गई।

मैसर्स डी ए वी ए आर एडीटिब्ज, ग्वालियर द्वारा दिए गए पृथक्कृत स्टार्च (मंड) के नमूने का विश्लेषण किया गया।

मैसर्स अनिल प्रोडक्ट्स लिमिटेड, अहमदाबाद से प्राप्त दस नमूनों को उनके उपांतरण को निश्चित करने के लिए विश्लेषित किया गया।

वर्ष के दौरान नमी मात्रा का परीक्षण करने के लिए 39 ग्राहकों से प्राप्त 53 नमूनों की जांच की गई।

वर्ष के दौरान 6 ग्राहकों से प्राप्त करीब 950 क्यूबिक फिट प्रकोष्ठ की सिंचाई की गई।

वर्ष के दौरान 17 फर्मों से प्राप्त 62 काष्ठ नमूनों के यांत्रिक परीक्षण किए गए।

वर्ष के दौरान कई फर्मों के लिए काष्ठ नमूनों के परिरक्षण टेस्ट किए गए।

वर्ष के दौरान कई फर्मों के लिए प्लाईवुड पर आसंजक परीक्षण किए गए।

व.अ.सं. के विभिन्न प्रभागों के लिए मृदा नमूनों का परीक्षण किया गया।

समाधात आकलन कार्यों और अध्ययन संकटों और सहयोगात्मक और काष्ठपरामर्शी परीक्षण में तकनीकी सेवाएं दी गई उनका विवरण इस प्रकार हैं:

1. मैसर्स राष्ट्रीय केमीकल्स एवं फर्टीलाईजर्स लिमिटेड, थाल एकक, रायगढ़, महाराष्ट्र।
2. मैसर्स कॉमनवेल्थ गेम्स प्रभाग, वी सी सी डब्ल्यू डी, एम डी सी राष्ट्रीय स्टेडियम, नई दिल्ली।
3. मैसर्स एच पी सी एल (ल्यूबी रिफाइनरी, मुम्बई)।
4. मैसर्स पॉलीप्लेक्स लिमिटेड, नोएडा।
5. मैसर्स साउवर्न केलिंग टावर प्राइवेट लिमिटेड, कोलकत्ता।
6. मैसर्स पालटेक कूलिंग टावर तथा उपकरण लिमिटेड, गुड़गांव।
7. मैसर्स हिन्दुस्तान पेट्रोलियम, कारपोरेशन, लिमिटेड, मुम्बई।
8. मैसर्स सब डिविजनल इंजीनियर प्रोवल, सब डिविजन नं. 1 पी डब्ल्यू डी वी और आर पानीपत।
9. मैसर्स स्टरलाईट इंडस्ट्रीज (1) लिमिटेड, ट्यूटीकोरिन।
10. मैसर्स नॉर्थ स्टीट कूलिंग टावर्स प्राइवेट लिमिटेड, गाजियाबाद।
11. मैसर्स सेंट्रल सब डिविजन–IV, सी–85 एच आई जी कालोनी, भुवनेश्वर, उड़ीसा।
12. मैसर्स मेलफ्रैंक इंजीनियर्स, मुम्बई।
13. मैसर्स कूलाको टावर प्राइवेट लिमिटेड, कोलकत्ता।

डल्बर्जिया सिस्सू और *यूकेलिप्टस* की प्रविष्टियों को अवमुक्त किया गया।

21 से 28 सितम्बर 2010 तक क्लोन्स पर कीटों के आक्रमण का पता लगाने के लिए पंजाब (पटियाला, लुधियाना, होशियारपुर), हरियाणा (हिसार), उत्तराखण्ड (हल्द्वानी) का दौरा किया।

नौहरधार, हिमाचल प्रदेश में ओक निष्पत्रक पर खोज की गई।

यूकेलिप्टस पर *लेप्टोसाइब इंवासा* के आक्रमण की स्थिति जानने के लिए हरियाणा, उत्तराखण्ड और पंजाब का दौरा किया गया।

फोमा और अन्य प्रतिरोधकों के लिए काष्ठ जनित कवक के द्वारा किए जा रहे अपक्षय की पहचान की गई।

फाइटो सैनिटरी को जारी करना।

डी एफ ओ पिथोरागढ़, वन प्रभाग को पिथोरागढ़ में देवदार वृक्षों की मर्त्यता से अवगत कराया।

सी एफ (अनुसन्धान), पंजाब वन विभाग को होशियारपुर वन प्रभाग में शीशम की मृत्यता के बारे में बताया।

हरियाणा वन विभाग को पौधशाला और रोपण पर सलाह दी गई।

शिव शक्ति रोपण लिमिटेड, बरेली को सहारनपुर में टीक मर्त्यता के बारे में बताया।

श्रीलंका के गाया एयरपोर्ट में बो वृक्ष को संगरोधक अनापत्ति दी।

वैशाली, बिहार में मुरझाते हुए पापलर वृक्षों पर बीमारी की जांच की।

दिल्ली सरकार के लिए औषधीय पादप बाल वृक्षों का उत्पादन।

कीटें सेवाओं की पहचान:

1. डॉ. एम. स्वामलियाना चानमारी, पश्चिमी आईजॉल, मिजोरम ने 31 दिसम्बर 2010 को जांच के लिए कीट सामग्री को भेजा (जांच की रिपोर्ट भेज दी गई है)।
2. डॉ. एस. पी. सक्सेना, ए एस पी ई ई कालेज आफ हार्टीकल्चर एण्ड फॉरेस्ट्री, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी, गुजरात ने 6 नवम्बर 2010 को पहचान के लिए कीट सामग्री भेजी (जांच की रिपोर्ट भेज दी गई है)।
3. डॉ. एस आई अहमद, शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर राजस्थान ने 24 जनवरी 2010 को पहचान के लिए कीट सामग्री भेजी (जांच की रिपोर्ट भेज दी गई है)।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा केरल वन विभाग को बीज उत्पादन क्षेत्रों के बारे में तकनीकी सलाह दी। टीम ने 3143 है. क्षेत्र का सर्वेक्षण किया

जिसमें से 1492 है. टीक रोपणियां को टीक बीज उत्पादन क्षेत्र में परिवर्तित करने के लिए उपयुक्त पाया गया।

संस्थान ने वन्य जीव वार्डन, साइलेन्ट वैली, राष्ट्रीय पार्क, केरल के अनुरोध पर पारिपुर्नस्थापन केंद्र थाथेनगलम के पास करीब 28 प्रजातियों की पहचान हेतु सेवाएं प्रदान की।

फिशर उद्भिज्यालय में पादप पहचान सेवाएं देना

तमिलनाडु वन विभाग, व.आ.वृ.प्र.सं. के विभिन्न अनुसन्धान प्रभागों, कॉलेजों और विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और किसानों को उनके अनुरोध पर पादप पहचान सेवाएं दी गई।

तितलियों के लिए नेक्टार तथा लारवा का पोषण करने वाले पादपों के बारे में सूचनाएं दी जो केरल की स्थितियों को ध्यान में रखकर, मुख्य वन संरक्षक (वन्य जीव) पालक्काड, केरल को दी गई। इसी प्रकार की सूचनाएं कोयम्बटूर की स्थितियों के अनुसार संस्थानों के पार्क ग्रूप कोयम्बटूर को तितली पार्क स्थापित करने के लिए दी गई।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

प्रकाष्ठ परीक्षण

वन्य जीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो, दक्षिणी क्षेत्र, चेन्नई, कमिश्नर (कस्टम), चेन्नई, वन विभाग और जनता को विश्लेषणात्मक सूचनाएं मुहैया कराई गइ। चदन काष्ठ नमना (*पेटिरोकार्पस सेन्टेलिनस*) अन्य काष्ठ पाउडरों आदि में मौजूद सुरक्षित तेल का विश्लेषण किया गया। सरकारी विभागों और जनता से विभिन्न अकाष्ठीय वन उत्पादों के बारे में मांग की कई तकनीकी जांचों के अंजाम दिया गया और मार्गदर्शन किया गया।

उपभोक्ताओं से प्राप्त पांच काष्ठ नमूनों का उनकी परिरक्षण मात्रा के लिए किया गया और रिपोटें दी गई।

रोपणियों पौधशालाओं और उपयोग होने वाले प्रकाष्ठ की कीटविज्ञानीय और रोग संबंधी समस्याओं के बारे में वन विभाग और एन जी ओ की कई पूछताछों का उत्तर दिया गया और उत्तम उपाय सुझाए गए।

चिड़ियाघर के बगीचे में जीवन वृक्षों पर काष्ठ अपक्षय समस्या का निरीक्षण किया गया और सलाहें दी गई (16 जुलाई 2010)।

फंगस की उपस्थिति के बारे में रिलायंस उद्योग लिमिटेड से प्राप्त नमूनों का परीक्षण किया और रिपोर्ट दी (संदर्भः 3916, दिनांक 8 नवम्बर 2010)।

एफ आर ओ, बंगलौर के अनुरोध पर नीम के वृक्ष पर रोग निवारण के उपाय बताए गए।

''शैलेक आधारित वार्निशों में दीमक और छिद्रकों का प्रतिरोध'' पर आई आई एन आर जी के सहयोग हेतु निदेशक द्वारा एम ओ यू पर हस्ताक्षर किए गए और अनुमोदन हेतु ए डी जी, भा.वा.अ.शि.प. को 8 मार्च 2011 को भेजा गया।

शिपराईट स्कूल, भारतीय नेवी, विशाखापट्टनम को तकनीकी समुद्री स्थितियों के तहत काष्ठ उपयोजन पर तकनीकी सलाह दी गई।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

खण्डवा वन प्रभाग, खण्डवा में 2 से 4 अगस्त 2010 तक एम पी विभाग को कीट आक्रमण के बारे में तकनीकी और परामर्शी सेवाएं दी।

करंजिया रेंज, डिन्डोरी वन प्रभाग, डिन्डोरी को साल वनों पर निष्पत्रकों और छिद्रकों के आक्रमण के बारे में 12 और 13 अगस्त 2010 तक तकनीकी और परामर्शी सेवाएं दी।

करंजिया रेंज, डिन्डोरी वन प्रभाग, डिन्डोरी को साल वनों पर छिद्रकों के आक्रमण के बारे में 7 से 9 दिसम्बर 2010 तक तकनीकी और परामर्शी सेवाएं दी।

शु.व.अ.सं., जोधपुर

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर द्वारा विकसित गौरव पाथ की रोपण का मूल्यांकन किया।

अरावली पहाड़ियों में वन मृदाओं जैवनिकासी, उत्पादकता वृद्धि के लिए जल संचयन पर वन

विज्ञान केंद्र और किसान मेले में सामग्रियों का प्रदर्शन किया और अनुसन्धान निष्कर्षों की जानकारियां दी।

विभिन्न संस्थानों ने व्याख्यानों का आयोजन करके किसानों में अनुसन्धान निष्कर्षों का प्रसार किया।

एस एफ डी, राजस्थान, गुजरात, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली किसानों और एन जी ओ को वानिकी और खासकर रेगिस्तानीकरण के रोकथाम, निम्नीकृत भूमियों का पुर्नस्थापन वन संवर्धन, आधुनिक नर्सरी, वन रक्षण और सुधार पर आवश्यकतानुसार तकनीकी सेवाएं दी गई।

हि.व.अ.सं., शिमला

संस्थान ने भारतीय वन सर्वेक्षण, उत्तरी क्षेत्र, शिमला को मृदा विश्लेषण के लिए मृदा नमी मात्रा, आर्गेनिक कार्बन और पादप पहचान के बारे में जानकारियां दी।

4.7 राजभाषा संबंधी क्रियाकलाप

राजभाषा के प्रयोग को अधिक से अधिक बढ़ाने के लिए भा.वा.अ.शि.प. और उसके संस्थानों द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के नियम विनियमों का पालन किया जा रहा है। भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 23 नवम्बर 2010 को हिन्दी सॉफ्टवेयर 'सारांश' पर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें 250 से अधिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों और भा.वा.अ.शि.प. एवं वन अनुसन्धान संस्थान के कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में श्री जे. पी. सिंह और श्री गगन शर्मा, आर्यन ई–सॉफ्ट लिमिटेड, नई दिल्ली ने व्याख्यान दिए।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर 27 जनवरी 2011 को प्रशिक्षण कार्यशाला का आयाज न किया जिसम भा.वा.अ.शि.प. एव वन अनुस न्धान संस्थान के 50 से अधिक कार्मिकों ने भाग लिया। कार्यशाला में श्री एम. आर. सकलानी, नराकास, देहरादून ने व्याख्यान दिया।

परिषद् द्वारा उसके संस्थानों और मुख्यालय में समय–समय पर राजभाषा कार्यान्वयन पर बैठकें आयोजित की गई। त्रैमासिक रिपोर्ट को संकलित करके राजभाषा विभाग, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय को भेजा जा रहा है। चौदह सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है और हिन्दी सप्ताह/पखवाड़ें का आयोजन किया जाता है। नराकास की बैठकों में भी नियमित रूप से भाग लिया जाता है।

राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए भा. वा.अ.शि.प. द्वारा आंतरिक मैग्जीन ''तरूचिंतन'' तथा अर्द्धवार्षिक न्यूजलैटर वानिकी समाचार का प्रकाशन किया जाता है।

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

विहित फार्मेट में हिन्दी की नियमित रिपोर्टें दी गई।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में हिन्दी सॉफ्टवेयर ''सारांश'' पर प्रशिक्षण

पैथोलॉजी प्रभाग के वैज्ञानिकों और कार्मिकों ने 3 अक्टूबर 2010 को हिन्दी गोष्ठी में भाग लिया।

चांद ह सितम्बर 2010 का हिन्दी दिवस का आयाज न किया। सी एस एफ इ आर क कामिका क लिए हिन्दी निबध ा आर श्रतलख पतियागिताए आयाजित की गइ।

सी एस एफ ई आर के कार्मिकों ने राजभाषा समिति की बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया।

हिन्दी कार्य में वृद्धि के लिए नियमित रूप से तिमाही बैठकें आयोजित की गई।

विभिन्न लक्षित ग्रूप के लिए हिन्दी में वैज्ञानिक प्रशिक्षण/साहित्य (पैम्पलेट्स, ब्रोशर, हैन्डआउट्स आदि) विकसित किया गया है।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

व.आ.वृ.प्र.सं. को सरकारी कार्यालयों की श्रेणी में शानदार प्रदर्शन करने के लिए वर्ष 2009–10 में प्रमाण पत्र तथा शील्ड दी गई।

हिन्दी अनुवादक की भर्ती की गई।

व.आ.वृ.प्र.सं. के कार्मिकों को राजभाषा प्रशिक्षण हेतु नामित किया।

व.आ.वृ.प्र.सं. के कार्मिकों को सॉफ्टवेयर सारांश में प्रशिक्षण दिया गया।

हिन्दी अनुवादक ने टी ओ एल आई सी, कोयम्बटूर में छमाही बैठक में भाग लिया।

व.आ.वृ.प्र.सं. म बाशर हिन्दी म बनाए जात ह।

तिमाही रिपोर्ट दी जाती है।

हिन्दी के पत्रों का उत्तर हिन्दी में ही दिया जाता है।

का.वि.प्रौ.सं., बंगलौर

भारत सरकार और भा.वा.अ.शि.प. द्वारा जारी किए गए राजभाषा कार्यान्वयन के निर्देशों का 2010–11 में पालन किया गया। संस्थान के निदेशक की अध्यक्षता में राजभाषा की तिमाही बैठकों का आयोजन नियमित रूप से किया गया।

हिन्दी में 55 प्रतिशत काम करने के लक्ष्य प्राप्त करने हेतु सभी प्रयास किए गए। संस्थान के प्रभागों और अनुभागों की सभी फाइलों के विषय द्विभाषी किए गए है।

संस्थान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) का सदस्य है और समय–समय पर आयोजित बैठकों/सेमीनारों में भाग लिया जाता है तथा निर्देशों/सुझावों का पालन किया जाता है।

संस्थान के अधिकारियों के लिए 31 अगस्त 2010 और 28 मार्च 2011 को राजभाषा केंद्रित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। लिपिक वर्गीय कर्मियों के लिए हिन्दी में नोटिंग/ड्राफ्टिंग का कार्यक्रम 25 जून 2010 को तथा हिन्दी सॉफ्टवेयर सारांश का आयोजन 16 दिसम्बर 2010 को किया गया।

इसके अलावा, अंग्रेजी के स्टेनोग्राफर्स को हिन्दी स्टेनोग्राफी का ज्ञान बढ़ाने हेतु हिन्दी प्राज्ञ परीक्षा पास कर चुके स्टेनोग्राफर्स के लिए 30 अगस्त से 10 सितम्बर 2010 तक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दो अवर श्रेणी लिपिकों को हिन्दी टंकण में प्रशिक्षित करने हेतु भारत सरकार, केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण उप संस्थान, बंगलौर में कम्प्यूटर पर 40 दिन के पूर्णकालिक कार्य हेतु प्रतिनियुक्त किया गया।

14 से 28 सितम्बर 2010 तक हिन्दी दिवस तथा हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया।

व.अ.के., हैदराबाद

14 से 24 सितम्बर 2010 तक वन अनुसन्धान केंद्र में हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर निबंध, गायन तथा वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

व.अ.के., हैदराबाद में 15 दिसम्बर 2010 को हिन्दी कार्यान्वयन कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री एस पी चौबे, निदेशक, राजभाषा द्वारा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय में सरकारी काम में राजभाषा के महत्व पर व्याख्यान दिया गया।

उ.व.अ.सं., जबलपुर

उ.व.अ.सं., जबलपुर में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया।

संस्थान के लिपिक वर्गीय तथा तकनीकी स्टॉफ के लिए हिन्दी प्रशिक्षण/कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.व.अ.सं., जोरहाट

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट में 8 से 14 सितम्बर 2010 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। श्री एन के वासु, निदेशक, व.व.अ.सं., जोरहाट ने समारोह का उद्घाटन किया। अपने व्याख्यान में निदेशक महोदय ने केंद्र सरकार के कार्यालयों/ संस्थानों में राजभाषा के रूप में हिन्दी के महत्व के बारे में संक्षेप में बताया। समारोह में प्रायः सभी व.व.अ.सं. कर्मियों ने भाग लिया जिनमें से अधिकांश ने विभिन्न प्रतियोगिताओं, जैसे हिन्दी निबंध, श्रुतलेख और कविता पाठन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इस एक सप्ताह के कार्यक्रम का समापन 14 सितम्बर 2010 को हिन्दी दिवस समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। उत्तम स्थान प्राप्त करने वालों को प्रमाण पत्र तथा प्राईज दिए गए। इस बार श्री एस एन राहँग को अपना दैनिक सरकारी काम हिन्दी में करने पर विशेष पुरस्कार दिया गया।

व.व.अ.स., जोरहाट में हिन्दी दिवस समारोह में भाग लेते हुए कार्मिक

सुश्री आइ ए ओ, भा.व.से. तथा जी सी (आर) पुरस्कार वितरित करत हुए

कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की समस्याएं तथा उपाय पर संस्थान के सम्मेलन कक्ष में 29 नवम्बर 2010 (सोमवार) को दो बजे हिन्दी कायश ाला का आयाजन किया गया। श्री एन क वास,निदेशक, आर एफ आर आई, जोरहाट, सत्र के अध्यक्ष रहे। अन्य भागीदारों में आईएओ, जी सी (आर), वैज्ञानिक तथा अन्य कार्मिक शामिल थे। श्री पाण्डेय ए के अरूण, प्रबंधन (रा.भा.), यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, जोरहाट ने अतिथि वक्ता के रूप में व्याखान दिया।

श्री पांडे, ए.के. अरूण, राजभाषा विषयों पर व्याख्यान देते हुए

कार्यशाला में सहभागी

हिन्दी कार्यशालाः जैवप्रौद्योगिकी एवं आनुवंशीय प्रभाग में 4 मार्च 2011 को कम्प्यूटर में हिन्दी अनुप्रयोग पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। दैनिक सरकारी कार्य में हिन्दी के व्यावहारिक उपयोग पर विशेष ध्यान दिया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर

वर्ष 2010–11 के दौरान 88.42 प्रतिशत फाईलों में हिन्दी में नोटिंग की गई। चार हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। संस्थान की हिन्दी पत्रिका ''आफरी दर्पण'' को अधिक उपयोगी बनाया गया और अनुसन्धान क्रियाकलापों का प्रकाशन सरल हिन्दी में किया गया। चौदह से 28 सितम्बर 2010 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिन्दी पखवाड़े के दौरान वर्ष 2009–10 में हिन्दी कार्य के लिए कार्मिकों को पुरस्कार दिए गए।

संस्थान के दो कार्मिकों को कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने हेतु सी–डी ए सी नोएडा द्वारा पांच दिन का प्रशिक्षण दिया गया। संस्थान की सूचना पुस्तिका को हिन्दी में प्रकाशित किया गया।

संस्थान को हिन्दी में कार्य करने पर नराकास, जोधपुर द्वारा वर्ष 2009–10 की राजभाषा चल वैजयंती और प्रशस्त्रि पत्र दिया गया। प्रशिक्षण और विस्तार सामग्रियों को हिन्दी में तैयार किया गया और वितरित किया गया। उपयोगी और मानक वैज्ञानिक लेखों/सामग्रियों को प्रकाशन हेतु विभिन्न हिन्दी मैग्जीनों को भेजा गया।

हि.व.अ.सं., शिमला

प्रशिक्षण सामग्री हिन्दी में मुहैया कराने के साथ–साथ, कार्यालय में हिन्दी की उचित कार्य पद्धति विकसित करने हेतु निम्नलिखित फार्मों को हिन्दी/द्विभाषी रूप में परिवर्तित किया गया।

1. छुट्टी संबंधित सभी आदेश
2. छुट्टी फार्म
3. चिकित्सा फार्म
4. दौरा भत्ता और छुट्टी यात्रा फार्म
5. क्रेडिट वाउचर
6. डेबिट फार्म्स
7. वन अग्रिम के लिए आवेदन पत्र
8. व्यय स्वीकृति फार्म
9. वाहन हेतु आवेदन
10. वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट फार्म तथा कार्यालय आदेश (द्विभाषी)

संस्थान में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा करने हेतु समीक्षा समिति गठित की गई है। समिति ने समीक्षाओं में पाया कि पहले की बजाय अब हिन्दी में अधिक कार्य किया जा रहा है।

सभी कम्प्यूटरों में मुख्यालय द्वारा दिया गया सारांश सॉफ्टवेयर लगा दिया गया है। अधिकारियों को कार्मिकों को सॉफ्टवेयर का प्रयोग करने में सक्षम बनाने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है।

संस्थान ने नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की शिमला की बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया।

संस्थान में 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस और 13 से 26 सितम्बर तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला ने निबंध प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए

व.उ.सं., रांची

श्री विनय कमार मिश्र, डी सी एफ तथा श्री ए क पाण्ड, यू डी सी ने 25 अगस्त 2010 को सी आई पी, कांके, रांची में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में भाग लिया।

4.8 पुरस्कार एवं सम्मान

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून

डॉ. रश्मि, वैज्ञानिक–सी, कैमिस्ट्री प्रभाग को द्वितीय राष्ट्रीय युवा वैज्ञानिक सम्मेलन, देहरादून में

सर्वोत्तम प्रस्तुति करने पर युवा वैज्ञानिक पुरस्कार दिया गया।

सुश्री नवप्रीत कौर, डॉ. रश्मि, श्री वाई सी त्रिपाठी को ''एच पी टी एल सी, *फेसीओलस ट्राईलोबस* रूट के फिंगरप्रिंटिग प्रोफाइल'' के प्रस्तुतिकरण के लिए ''फाइटोकेमेस्ट्री एवं आयुर्वेदः महत्व और संभावनाओं'' पर 25 दिसम्बर 2010 को देहरादून में 7वें सिम्पोजियम में सर्वोत्तम प्रस्तुति हेतु प्रथम पुरस्कार दिया गया।

टाईनोस्पोरा साइनेन्सिस के अभिलक्षणों में हरीतिमा नामक शीर्षक पर पर्यावरणीय संरक्षण, सतत् प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन एवं क्षेत्रीय विकास की रणनीतिया (उत्तराखण्ड क सदभ म) पर 1 आर 2 मइ 2011 को आयोजित सेमीनार में, सुश्री शिप्रा नागर, श्री विनीत कुमार और वाई. सी. त्रिपाठी को सर्वोत्तम प्रस्तुति हेतु प्रथम पुरस्कार दिया गया। सम्मेलन का आयोजन रसायन विभाग, डी बी एस पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, देहरादून ने किया।

डॉ. पारूल भट्ट, वैज्ञानिक–सी ने डी जी पी आर के अभिलक्षण तथा उसके अनुप्रयोग चिकपी की उपज वृद्धि के लिए जैवउर्वरक के रूप में अनुप्रयोग पर 10 से 12 नवम्बर 2010 को दून विश्वविद्यालय, देहरादून में आयोजित पांचवीं उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं तकनीकी कांग्रेस में अनुसन्धान प्रलेख पस्तुत करन पर यवा वज्ञानिक परस्कार पाप्त किया।

सी. एम. माधवन तथा ए. क. रंना न उत्तराखण्ड म विभिन्न भू–उपयोजन पद्धतियों के तहत मृदा केटियोनिक सक्ष्म पाषक की पडास्फरिक वितरण पर व.अ.सदेहरादून में 22 और 23 फरवरी 2011 को आयोजित भू–दृश्य पुनर्स्थापन प्रक्रियाओं पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पोस्टर प्रस्तुति पर तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया। डॉ. एच. एस. गिनवाल को वर्ष 2009 के सर्वोत्तम अनुसन्धान प्रकाशन पर बैंडिस अवार्ड दिया गया जिसे इंडियन फॉरेस्टर (गिनवाल, एच. एस. तथा वी. एस. जाडोन 2009) में प्रकाशित किया गया।

आर ए पी डी मार्कर गोर्डन में उद्‌गम स्थल वैविध्य, इंडियन फॉरेस्टर 135 (4):449–458)।

सुश्री परवीन, वैज्ञानिक–सी को ऊतक व्यवहार द्वारा संकटापन्न और महत्वपूर्ण औषधीय पादपों का संरक्षण और प्रसार पर सतत् संसाधन उपयोजन, जैवविविधता अभिलक्षण के तकनीकी सत्र के दौरान सर्वोत्तम मौखिक प्रस्तुति देने पर पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार, जलवायु परिवर्तन के साथ साथ वन्यजीव और जैवविविधता संरक्षण पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया गया जिसका आयोजन शेर–ए–कश्मीर, कृषि विश्वविद्यालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी– कश्मीर, श्रीनगर, जम्मू व कश्मीर, भारत में 3 से 5 जून तक किया गया।

सुश्री प्रवीण, वैज्ञानिक–सी तथा सुश्री शिवानी डोभाल, वैज्ञानिक–डब्ल्यू ओ एस–बी को 15 से 21 अगस्त 2010 तक पव कागस आर आइ य एफ आर आ,और विश्व कांग्रेस सियोल, कोरिया में 23 से 28 अगस्त 2010 तक आयोजन पर एस ए पी पुरस्कार दिया गया।

डॉ. मनीशा थपलियाल ने पर्यावरण विज्ञान एवं वानिकी पर अपने प्रलेख बीज रूप विज्ञान अंकुरण तथा अध्ययन–डिप्लोंनेमा ब्यूटिरेसिया पर 10 से 12 नवम्बर 2010 तक पांचवे उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं तकनीकी कांग्रेस, दून विश्वविद्यालय, देहरादून में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर

डॉ. यशोदा ने सियोल, उत्तरी कोरिया में तेइसवें आई यू एफ आर ओ वानिकी कांग्रेस हेतु 23 से 28 अगस्त 2010 तक के लिए आई यू एफ आर ओ यात्रा अवार्ड प्राप्त किया।

डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, वैज्ञानिक–ई, को तेइसवें आई यू एफ आर ओ 2010 की विश्व कांग्रेस में भाग लेने हेतु 23 से 28 अगस्त 2010 तक सियोल, गणराज्य कोरिया, में वैज्ञानिक सहायता कार्यक्रम अनुदान प्राप्त हुआ।

डॉ. आर. के. वर्मा, प्रमुख, वन रोगविज्ञान प्रभाग ने माइकोलाजी में महत्वूपर्ण योगदान के लिए वर्ष 2010 म पादप वगीकरण विज्ञान म पा. क. एस. थिन्ड मैडल प्राप्त किया।

व.व.अ.सं., जोरहाट

व.व.अ.सं., जोरहाट को 7 मार्च 2011 में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बाइसवीं बैठक में राजभाषा के प्रगति के लिए स्वायत श्रेणी में पुरस्कार दिया गया।

पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री एन.के. वासु, निदेशक, व.व.अ.सं., जोरहाट

व.उ.सं., रांची

श्री आर. दास को आधुनिक जीव विज्ञान 2010 पर ग्लोबल कॉन्सोर्टियम द्वारा समुदाय आधारित प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर योगदान के लिए लाईफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड दिया गया।

4.9 विशेष क्रियाकलाप (जैसे वन महोत्सव, वानिकी दिवस और अन्य अवसर)

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा 11 मई 2010 को शताब्दी वन विज्ञान केंद्र में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया जिसमें विभिन्न स्कूलों के निःशुल्क प्रविष्टि दी गई।

विश्व पर्यावरण दिवस

पाँच जून 2010 को मुख्य भवन के दीक्षांत गृह में वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस और व.अ.सं. दिवस के अवसर पर पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. एस एस नेगी, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने आसपास सफाई रखने और प्लास्टिक पॉलीथीन से परिसर को मुक्त रखने पर जोर दिया। इस अवसर पर सभी छः संग्रहलयों में निःशुल्क प्रविष्टि दी गई।

व.अ.के., हैदराबाद ने व.अ.के. कैम्पस हैदराबाद में 9 जून 2010 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण किया।

शु.व.अ.सं. जोधपुर ने 5 जून 2010 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया और ''कई प्रजातियां, एक उपग्रह, एक भविष्य'' पर बैनर तैयार किया और व्याख्यान के साथ–साथ वृक्षारोपण किया। लोगों में जागरूकता लाने के लिए एक पैम्पलेट को अवमुक्त कर वितरित किया गया।

हि.व.अ.सं., शिमला ने हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग (वन्यजीव) के घनिष्ट सहयोग से पॉटर्स हिल (हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के पास) समर हिल शिमला में, विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून 2010) के अवसर पर स्कूली बच्चों और स्थानीय ग्रामीणों के लिए जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया। समारोह में राज्य वन विभाग, हिमाचल प्रदेश के अधिकारी और एन जी ओ प्रतिनिधि शामिल थे। इसमें विभिन्न स्कूलों के 150 विद्यार्थियों सहित उनके शिक्षक और स्थानीय

उ.क 800

पोटर्स हिल, शिमला में विश्व पर्यावरण दिवस समारोह

ग्रामीण शामिल हुए। स्कूली बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए क्विज, भाषण प्रतियोगिता, नारे लिखना और ड्राईंग पेंटिंग की प्रतियोगिताएं भी संस्थान में आयोजित की गई।

वन्य जीव सप्ताह

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 1 से 7 अक्टूबर 2010 तक वन्यजीव सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर व.अ.सं. के मुख्य भवन के सूचना केंद्र में प्रदर्शनी लगाई गई।

व.व.अ.सं., जोरहाट में 1 से 7 अक्टूबर 2010 तक वन्यजीव सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर पेंटिंग प्रतियोगिता, फोटो प्रदर्शनी, वन्यजीवों पर फिल्मों का प्रदर्शन, प्रदर्शन ग्राम, पक्षी दर्शन और वन्यजीवों पर वार्तालाप का अयोजन किया गया।

व.व.अ.सं. में चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते बच्चे

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 25 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2010 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूकता उत्पति एवं प्रचार पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। व.अ.सं. बोर्ड रूम में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

नवम्बर 2010 के दौरान व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में सतर्कता जागरूकता दिवस मनाया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई और पुरस्कार वितरित किए गए।

व.अ.सं., हैदराबाद में 25 अक्टूबर से 1 नवम्बर 2010 तक सतकत। जागरूकता दिवस मनाया गया। इस अवसर पर निबंध लेखन और वाद–विवाद प्रतियोगिएं आयोजित की गई।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

वन अनुसन्धान संस्थान में 28 फरवरी 2011 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। इस दिन बच्चों तथा आगंतुकों के लिए छः संग्रहलयों में निशुल्क प्रविष्टि थी।

विश्व वानिकी दिवस

वन अनुसन्धान संस्थान में विश्व वानिकी दिवस मनाया गया। व.अ.सं. के सूवना केंद्र में प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें पोस्टर, चित्रण और संस्थान की उपलब्धियों का प्रदर्शन किया गया। इस दिन व.अ.सं. के म्यूजियम, जनता के लिए खुले रखे गए। विभिन्न शिक्षण

हि.व.अ.सं., शिमला म ''जलागम क्षेत्रों की क्षमतावृद्धि : समस्याएऔर उपाय'' पर आयोजित कार्यशाला म भाग लेत सहभागी

संस्थाओं के विद्यार्थियों और सामान्य जनता ने इस सुअवसर का लाभ उठाया।

हि.व.अ.सं., शिमला में 23 मार्च 2011 को जलागम क्षेत्रों की क्षमतावृद्धि : समस्याएं और उपाय पर विचारमंथन अंतः सक्रिय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला अंतर्राष्ट्रीय वानिकी वर्ष से भी संबंधित थी। हिमाचल प्रदेश वन विभाग, यू एच एफ, नौनी, सोलन, हिमालयी अध्ययन संस्थानों के वैज्ञानिकों, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि और प्रगतिशील किसानों सहित करीब 60 भागरदारों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

व.व.अ.सं., जोरहाट द्वारा 21 मार्च 2011 को प्रदर्शन ग्राम– मेलांग ग्रान्ट, जोरहाट, असम में विश्व वानिकी दिवस का आयोजन किया गया। स्कूली बच्चों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता, वानिकी क्रियाकलापों पर

व.व.अ.सं. प्रदर्शन ग्राम (मेलेंग ग्रान्ट) में पूर्वोत्तर की जैव विविधता वन के अन्तर्राष्ट्रीय दिवस पर स्मरणीय बनाने के लिए श्री एन.के. वासु निदेशक, व.व.अ.सं., जोरहाट एक पोस्टर का विमोचन करते हुए

गया जिसमें ग्रामीण लोग भी शामिल हुए।

वन महोत्सव

व.अ.के., हैदराबाद में 27 जुलाई 2010 को वन महोत्सव का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एफ आर सी कैम्पस में वृक्षारोपण किया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर में केंद्रीय विद्यालय नं. 2, सिकारगढ़, आर्मी एरिया, जोधपुर में 23 जुलाई 2010 को वन महोत्सव मनाया गया। अध्यापकों और विद्यार्थियों ने, के वी कैम्पस में विभिन्न छायावृक्षों के 150 पौधों का रोपण किया। निदेशक, प्रधानाचार्य, प्रभाग प्रमुखों और कुछ विद्यार्थियों ने वन और वन्यजीवों के महत्व पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर एक ब्रोशर को प्रकाशित करके केंद्रीय विद्यालय नं. 2, सिकारगढ़, आर्मी एरिया, जाधपुर क विद्याथिया म वितरित किया गया।

विविध

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने सिटीजन फॉर ग्रीन दून, 140/9, राजपुर रोड, जाखन, देहरादून में पंडित जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन पर देहरादून वृक्ष समारोह, द्वितीय वर्ग में भाग लिया।

सीरी फोर्ट सभागार कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली में 10 दिसम्बर 2011 को स्व. हरिसिंह (पूर्व आई जी एफ) का जन्मदिवस मनाया गया। इस अवसर पर हरिसिहः एक जीवन वृत्त नामक पुस्तक को अवमुक्त किया गया। इस अवसर पर डॉ. पी. जे. दिलीप कुमार, वन महानिदेशक एवं विशेष सचिव, भारत सरकार, मुख्य अतिथि थे।

तेइस अप्रैल 2010 को काविप्रौ.सं., बंगलौर में ''पृथ्वी दिवस'' मनाया गया। इस अवसर पर निदेशक, का. वि.प्रौ.सं. के अलावा श्री ए. के. वर्मा, पी सी सी एफ तथा एम डी, के एस एफ आई सी तथा प्रो. रवीन्द्रनाथ, आई आई एस सी, बंगलौर ने भी वार्ताएं पस्तुत की। रापण कायक्रम का आयाजन भी किया गया।

येन्टागनहल्ली पंचायत के सीतारमहातारपलया गांव में 3 सितम्बर 2010 को प्रदर्शन/अंतःसक्रिय बैठक का आयोजन किया गया। श्री रीतेश कुमार डी. राम (विस्तार अधिकारी) और आर. यजुमलैई, वैज्ञानिक–बी ने इसमें भाग लिया और ग्रामीणों तथा अन्य चयनित लोगों के साथ विचार–विमर्श किया। ग्रामीणों को संस्थान के विभिन्न क्रियाकलापों के बारे में बताया गया

जो किसानों और ग्रामीण समुदाय के लिए लाभदायी हैं। सूचनापोस्ट[illegible] प्रौद्योगिकी अर्थात मॉडल नर्सरी विकास, चंदन रोपण तकनीकें, बांस प्रसार और उपयोजन आदि के बारे में बताया गया। किसानों को आर्थिक लाभों तथा स्थानीय उपयोजन रोपणों में उगाए जाने वाले प्रकाष्ठ जिनके बारे में कम जानकारी है, के बारे में बताया गया जैसे *एकेसिया औरीकूलीफार्मिस, डल्बर्जिया सिस्सू* तथा *हेविया ब्रेसिलेन्सिस* (रबड़ काष्ठ), *ग्रेवीलिया रोबुस्टा* (सिल्वर ओक), *मेलिया कम्पोजिटा* (मालाबार नीम) *ई.* हाईब्रिड आदि। किसानों ने इन प्रजातियों की पौध के बारे में जानना चाहा ताकि वे उन्हें अपने खेतों में उगा सकें।

जारी परियोजना सहयोगात्मक समुदाय आधारित वन प्रबंधन परियोजना, बिहार के तहत सामान्यतः उत्तरी बिहार, खासकर वैशाली जिले में कृषि वानिकी कार्यक्रम बढ़ाने के लिए 27 और 28 जुलाई 2010 को पटना में क्रेता–विक्रेता की बैठक आयोजित की गई जिससे उत्पादकों/किसानों और संबद्ध निकायों के बीच सीधा संवाद हो सका जो कृषिवानिकी उत्पाद को खरीदते और बेचते हैं।

तेइस और 24 मार्च 2011 को काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान में काष्ठ उपभोक्ताओं की अंतःसक्रिय बैठक आयोजित की गई और उत्पादों की प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन श्री कौशिक मुखर्जी, प्रधान सचिव, वन विभाग, कर्नाटक सरकार द्वारा किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में उप महानिदेशक, दूरदर्शन, बंगलौर तथा स्थानीय एम एल ए भी उपस्थित थे। बैठक के दौरान आर्कीटेक्ट, बिल्डर्स, इंटीरियर डेकोरेटर्स, हस्तशिल्प क्षेत्र और काष्ठ [illegible] जित किया गया। काष्ठ उत्पाद प्रदर्शनी को स्थानीय लोगों, विद्यार्थियों और कई अन्य संगठनों द्वारा सराहा गया। प्रदर्शनी में, बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों, विद्यार्थियों और काष्ठ उद्योगों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रदर्शनी का समापन कर्नाटक के लघु उद्योग एवं वन मंत्री द्वारा किया गया।

ग्यारहवीं पश्चिमी राजस्थान हस्तशिल्प उत्सव 2011, जोधपुर में भाग लिया जिसे डी आई सी तथा जिला प्रशासन द्वारा विद्यार्थियों, एन जी ओ, प्रगतिशील किसानों को अवगत कराने हेतु आयोजित किया गया था। उत्सव में 2 से 11 जनवरी 2011 तक अनुसन्धान और शु.व.अ.सं. की प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया गया।

शु.व.अ.सं., जोधपुर में 22 मई 2010 को जीवविज्ञानीय विविधता पर अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया गया। इस अवसर पर जैवविविधता, विकास और गरीबी उन्मूलन विषय पर बैनर तैयार किया गया। वैज्ञानिकों के व्याख्यान आयोजित किए गए और वृक्षारोपण किया गया। एक पैम्पलेट भी अवमुक्त किया गया और व्यापक प्रचार तथा जागरूकता लाने के उद्देश्य से वितरित किया गया।

रेगिस्तानीकरण का मुकाबला करने के लिए, शु.व.अ.सं., जोधपुर में 17 जून 2010 को विश्व दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मृदावृद्धि से सब जगह जीवन वृद्धि होती है विषय पर बैनर तैयार किए गए। इसके अलावा अन्य क्रियाकलाप सम्पन्न किए गए जैसे व्याख्यान और वृक्षारोपण। इस अवसर पर पैम्पलेट भी अवमुक्त किया गया।

पटना में कृषि वानिकी उत्पाद का उपभोग पर क्रेता–विक्रेता की बैठक

प्रतिष्ठित आगंतुक

डॉ. फिल हैरिस, प्रो. पादप विज्ञान विभाग, भूगोल एवं पर्यावरण कान्वेंटरी विश्वविद्यालय, यू.के. ने 17 मई 2010 को शु.व.अ.सं., जोधुपर का दौरा किया और व्याख्यान दिया।

श्री अनंत राय, माननीय वन मंत्री, पश्चिम बंगाल ने 20 और 21 अक्टूबर 2010 को शु.व.अ.सं., जोधपुर का दौरा किया। उन्होने ए एफ आर आई, जोधपुर द्वारा विकसित तकनीकों और क्रियाकलापों का अध्ययन किया। उन्होने प्रयोगशालाओं का दौरा किया। उ.व.अ.सं., जोधपुर के वन कार्मिकों और वैज्ञानिकों से विचार–विमर्श किया और उन्हें संबोधित किया तथा उ.व.अ.सं., जोधपुर की पौधशालाओं का भ्रमण किया। निदेशक, उ.व.अ.सं., जोधपुर, सी सी एफ, जोधपुर (वन्यजीव) ने एम आई सी, एफ टी डब्ल्यू बी को विभिन्न कार्यों से अवगत कराया। उन्होने मोहनगढ़ और बीकानेर के वी वी के वर्क्स का दौरा, श्री एम आर बलोच, प्रधान, कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग, उ.व.अ.सं., जोधपुर तथा राज्य वन विभाग, राजस्थान के वन कार्मिकों के साथ किया।

श्री के एस चौहान, आई एफ एस, हरियाणा, पंचकुला, श्री जगदीश चंद्र, आई एफ एस, सी एफ अनुसन्धान सर्कल, पिंजौर, श्री बलबीर सिंह खोखा, एच एफ एस, प्रभागीय वन अधिकारी, बीज एकत्रण प्रभाग, पिंजौर तथा श्री परमजीत सगवान, प्रभागीय वन अधिकारी, अनुसन्धान प्रभाग, ने 31 जनवरी से 2 फरवरी 2011 तक संस्थान का दौरान किया। उ.व.अ.सं. द्वारा राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में वानिकी और कृषि वानिकी से संबंधित विषयों पर निदेशक, प्रभाग प्रमुखों से व्यापक विचार–विमर्श किया गया।

जम्मू और कश्मीर राज्य में पड़ने वाले लेह और लद्दाख के शीत रेगिस्तानों में वानिकी क्रियाकलापों को प्रतिबंधित करने के लिए श्री जयराम रमेश, माननीय राज्य मंत्री, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा 14 जुलाई 2010 को लेह में शीत रेगिस्तान फील्ड रिसर्च स्टेशन का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर जनाब मियां अल्ताफ अहमद, माननीय मंत्री वन, पर्यावरण एवं पारितंत्र, जम्मू व कश्मीर सरकार तथा श्री छेरंग दोरजी, माननीय, अध्यक्ष लद्दाख स्वायत पर्वत विकास परिषद्, लेह (जम्मू और कश्मीर) तथा हेम पाण्डेय, आई ए एस, संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन, नई दिल्ली भी उपस्थित थे। स्टेशन के उद्घाटन के अवसर पर डां. जी. एस. रावत, महानिदश ाक, भा.वा.अ.शि.प., दह रादन , श्री मोहिन्दर पाल, भा व से, निदेशक, हि.व.अ.सं., शिमला तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित थे।

श्री जयराम रमेश, माननीय पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) द्वारा लेह में शीत मरूस्थल क्षेत्रीय अनुसन्धान केंद्र का उद्घाटन

आज के परिदृश्य में लोगों को पर्यावरण के बारे में अधिक जानकारी देने के लिए ब्रीटिश काउंसिल, नई दिल्ली की टीम ने डब्ल्यू डब्ल्यू एफ, शिमला एकक् के साथ 17 सितम्बर 2010 को विचार–विमर्श किया जिसके बाद फिल्म–शो का आयोजन किया गया जिसमें परिषद् के मुख्य अधिकारी और कार्मिक शामिल हुए।

मेला

वन अनुसन्धान संस्थान ने आई टी बी पी, सीमाद्वार, देहरादून द्वारा 11 से 14 फरवरी 2011 तक आयोजित बसंत मेले में भाग लिया। कार्यक्रम में एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने द्वितीय कृषक मेले का आयोजन, वन एवं वन्यजीव विभाग, केरल के साथ मिलकर 31 जनवरी 2011 को फाईन आर्ट्स सोसाइटी सभागार में आयोजित किया। श्री बिनोय विस्वाम, माननीय मंत्री वन एवं भवन, केरल सरकार, श्री डोमीनिक विधान सभा सदस्य, इरनाकुल्लम, श्री टी. एम. मनोहर, भा.व.से., प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रधान, वन फोर्स, केरल, वन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, के व.अ.सं. के वैज्ञानिक, एन जी ओ प्रतिनिधियों ने इस मेले में भाग लिया। मेले में केरल के विभिन्न भागों से 600 किसानों ने भाग लिया। इस अवसर पर केरल के विशेष संदर्भ में वृक्ष प्रजातियों की खेती और प्रबंधन पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने 18 फरवरी 2011 को पेरूमती में, पालक्कड़ जिला वृक्ष उत्पादक संघ की बैठक में भाग लिया और पालकक्ड क्षेत्र के लिए उपयुक्त प्रजातियों की खेती और प्रबंधन, विपणन स्तरीय रोपण स्टॉक उत्पादन, रोपण तकनीकें, क्लोनल वानिकी, बीज प्रहस्तन पद्धतियों आदि पर 150 से अधिक किसानों के साथ विचार–विमर्श किया।

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने केरल वन विभाग द्वारा 6 से 10 फरवरी 2011 तक तिरूवंतपुरम में 6 से 10 फरवरी 2011 तक केरल वन विभाग द्वारा आयोजित ''वन विश्मायम'' में भाग लिया।

व.उ.सं., रांची ने रामकृष्ण मिशन, मोराहाबोदी, रांची द्वारा 4 और 5 फरवरी 2011 को गेटालसुड, रांची में आयोजित किसान मेले (2011) में एक प्रदर्शन स्टाल लगाया। व.उ.सं. के स्टाल को सर्वोत्तम स्टाल घोषित किया गया और प्रथम पुरस्कार दिया गया।

व.उ.सं., रांची ने भारतीय प्राकृतिक रेजिन एवं गोंद संस्थान, नमकुमा, रांची में 10 फरवरी 2011 को आयोजित किसान मेले में भाग लिया।